प्रेरितों का विश्वास-कथन

अध्याय 6

उद्धार

Manuscript

thirdmill

Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

परिचय..1
क्षमा..2
  पाप की समस्या..2
    पाप की परिभाषा...2
    पाप की उत्पत्ति...4
    पाप के परिणाम...5
  दिव्य अनुग्रह..6
    पिता...6
    पुत्र..7
    पवित्र आत्मा..8
  व्यक्तिगत उत्तरदायित्व...9
    शर्तें...9
    साधन..11
पुनरूत्थान..15
  स्राप...16
  सुसमाचार..17
    पुराना नियम...17
    नया नियम..20
    यीशु का पुनरूत्थान...21
  छुटकारा..22
    वर्तमान जीवन...22
    मध्यम अवस्था...22
    नया जीवन...24
अनन्त जीवन...25
  समयावधि...25
  गुणवत्ता...27
  स्थान..29
उपसंहार..30

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

प्रेरितों का विश्वास-कथन

अध्याय छः

उद्धार

परिचय

इन अध्यायों में, हमने बताया कि प्रेरितों के विश्वास-कथन की शुरूआत उन विश्वासों के साराँश के रूप में हुई जिनका आरम्भिक मसीही बपतिस्मा लेते समय अंगीकार करते थे। उस सन्दर्भ में, यह कल्पना करना आसान है कि बहुतों के लिए, उनके अंगीकार का सर्वाधिक भावनात्मक भाग विश्वास-कथन के वे सूत्र थे जो उनके व्यक्तिगत उद्धार पर विश्वास को अभिव्यक्त करते थे।

और क्या यह हमारे बारे में भी सत्य नहीं है? हम अपने महान परमेश्वर - पिता, पुत्र, और पवित्र आत्मा से प्रेम करते हैं। और हम उसके द्वारा बनाई गई कलीसिया को महत्व देते हैं। परन्तु हमारी सबसे बड़ा आनन्द यह खुशखबरी है कि उद्धार हमारे लिए है। हम इस आश्वासन से मगन होते हैं कि परमेश्वर हमसे प्रेम करता है, वह हमारे पापों को क्षमा करता है, और उसने हमारे लिए अब यहाँ और आने वाले संसार में एक अद्‌भुत नियति रखी है।

यह प्रेरितों के विश्वास-कथन की हमारी श्रृंखला का छठा अध्याय है, और हमने इसका शीर्षक रखा है - उद्धार। इस अध्याय में, हम प्रेरितों के विश्वास-कथन में विश्वास के सूत्रों को देखेंगे जो क्षमा और अनन्त जीवन के सुसमाचार में विश्वास की पुष्टि करते हैं।

पवित्र-वचन में, उद्धार शब्द का विविध तरीकों से प्रयोग किया गया है, जो संकेत देता है कि मसीह में हमारे उद्धार के कई आयाम हैं। जब आधुनिक मसीही उद्धार शब्द का प्रयोग करते हैं, तो सामान्यत: हमारे मन में उन आशीषों की प्राप्ति होती है जिन्हें मसीह ने अपनी प्रायश्चित मृत्यु के द्वारा खरीदा, नया जन्म पाना और परमेश्वर से मेल-मिलाप करना, पवित्रीकरण की प्रक्रिया में जीवन में आगे बढ़ना, और नये आकाश और पृथ्वी में हमारी अन्तिम महिमा में पूर्णता।

प्रेरितों का विश्वास-कथन उद्धार के इस पहलू के बारे में इन शब्दों में बात करता है:

> मैं ...
> पापों की क्षमा में,
> देह के पुनरूत्थान में,
> और अनन्त जीवन में विश्वास करता हूँ।

अब, ये तीन विचार - क्षमा, पुनरूत्थान, और अनन्त जीवन - हमारे उद्धार के बाइबल के वर्णन को पूरी तरह नहीं बताते हैं। परन्तु वे प्रेरितों के विश्वास-कथन में प्राथमिक कथन हैं जो व्यक्ति विशेष के उद्धार के समय परमेश्वर द्वारा किए जाने वाले कार्यों के विशेष पहलुओं में विश्वास का अंगीकार करते हैं।

प्रेरितों के विश्वास-कथन में उद्धार पर हमारा विचार-विमर्श हमारे उद्धार के इन प्रत्येक आयामों को संबोधित करेगा। पहला, हम पापों की क्षमा के बारे में बात करेंगे। दूसरा, हम देह के पुनरूत्थान के सिद्धान्त को देखेंगे। और तीसरा, हम अनन्त जीवन की प्रकृति को देखेंगे। आइए पहले हम परिचित विषय पापों की क्षमा से शुरू करें।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

क्षमा

प्रेरितों के विश्वास-कथन में क्षमा के अर्थ को समझने के लिए हम तीन निकटता से संबंधित मुद्दों का देखेंगे: पहला, पाप की समस्या जो क्षमा को आवश्यक बनाती है; दूसरा, दिव्य अनुग्रह जो क्षमा को संभव बनाता है; और तीसरा, हमारा व्यक्तिगत उत्तरदायित्व, वे बातें जो क्षमा पाने के लिए हमें करनी हैं। पहले हम पाप की समस्या को देखेंगे।

पाप की समस्या

बाइबल पर विश्वास करने वाले मसीही पहचानते हैं कि यीशु के क्रूस पर मरने के मुख्य कारणों में से एक हमारे पाप के द्वारा उत्पन्न समस्या को हल करना था। पाप हमें परमेश्वर की आशीषों से दूर कर देता है, और हमें स्राप के अधीन कर देता है। और ऐसा कोई मार्ग नहीं है जिस के द्वारा हम स्वयं इस समस्या पर जय पा सकें। जब हम पाप की समस्या के बारे में बात करते हैं तो हमारा मतलब है: पाप हमें दोषी ठहराता है। और मसीह के अलावा, हमारे पास स्वयं को इसकी उपस्थिति या इसके परिणामों से बचाने का कोई मार्ग नहीं है।

पवित्र-वचन द्वारा सिखाई गई पाप की समस्या को हम तीन भागों में देखेंगे। पहला, हम पाप की एक धर्मशास्त्रीय परिभाषा देंगे। दूसरा, हम मानव जाति में पाप की उत्पत्ति के बारे में बात करेंगे। और तीसरा, हम पाप के परिणामों को देखेंगे। आइए पाप की परिभाषा से शुरू करें।

पाप की परिभाषा

बाइबल विभिन्न रीतियों से पाप के बारे में बात करती है। यह पाप का वर्णन करने के लिए अराजकता, विद्रोह, अधर्म, अपराध, बुराई, लक्ष्य से चूकना, और विभिन्न प्रकार के अन्य शब्दों का प्रयोग करती है। और इन में से प्रत्येक शब्द पाप के बारे में हमारी समझ को बढ़ाता है।

परन्तु जब पवित्र-वचन अमूर्त रूप में पाप की बात करता है - जब यह पाप के लिए अपनी परिभाषा देता है - तो एक शब्द सबसे अलग नजर आता है: अराजकता। बाइबल की शब्दावली में, पाप मूलत: परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लंघन है। जैसे प्रेरित यूहन्ना ने 1 यूहन्ना 3:4 में लिखा:

> जो कोई पाप करता है, वह व्यवस्था का विरोध करता है; और पाप तो व्यवस्था का विरोध है। (1 यूहन्ना 3:4)

अराजकता के रूप में पाप पर इसी बल को हम रोमियों 7:9-25, और 1 कुरिन्थियों 15:56 जैसे स्थानों पर देखते हैं। पाप का यह मूल विचार विभिन्न मसीही परम्पराओं के धर्मविज्ञान में भी प्रकट है।

एक उदाहरण के रूप में, वेस्टमिन्स्टर लघु प्रश्नोत्तरी के प्रश्न एवं उत्तर संख्या 14 को देखें। इस सवाल के उत्तर में:

> पाप क्या है?

प्रश्नोत्तरी का जवाब है:

> पाप परमेश्वर की व्यवस्था की अनुरूपता का अभाव, या उसका उल्लंघन है।

ध्यान दें कि यह उत्तर परमेश्वर की व्यवस्था को तोड़ने के दो सामान्य प्रकारों की पहचान करता है: व्यवस्था की अनुरूपता का अभाव, और व्यवस्था का उल्लंघन।

एक ओर, व्यवस्था की अनुरूपता का अभाव पवित्र-वचन की आज्ञाओं को मानने में असफल होना है। यह अक्सर मिटाने का पाप कहलाता है क्योंकि हम उसे छोड़ देते हैं या अनदेखा कर देते हैं जो हमें करना चाहिए। दूसरी तरफ, व्यवस्था का उल्लंघन वह कार्य करना है जिसे करने से पवित्र-वचन रोकता है। इस प्रकार के उल्लंघन को अक्सर आज्ञा का पाप कहा जाता है क्योंकि हम सोचने, महसूस करने या जान-बूझकर कुछ ऐसा कार्य करने के द्वारा पाप करते हैं जिसे करने से पवित्र-वचन मना करता है।

अब, जब हम परमेश्वर की व्यवस्था के बारे में एक लक्ष्य के रूप में बात करते हैं जो पाप को परिभाषित करता है, तो यह बताना महत्वपूर्ण है कि परमेश्वर की व्यवस्था मनमानी या बेतरतीब नहीं है। इसके विपरीत, व्यवस्था परमेश्वर के सिद्ध चरित्र का प्रतिबिम्ब है। देखें पौलुस रोमियों 7:12 में व्यवस्था का किस प्रकार वर्णन करता है:

> व्यवस्था पवित्र है, और आज्ञा भी ठीक और अच्छी है। (रोमियों 7:12)

जैसे पौलुस ने यहाँ कहा, परमेश्वर की आज्ञाएँ परमेश्वर के समान ही हमेशा पवित्र, धर्मी और अच्छी हैं। परमेश्वर की आज्ञाएँ हमेशा उसके स्वभाव से मेल खाती हैं।

इसी कारण पवित्र-वचन सिखाता है कि यदि हम परमेश्वर से प्रेम करते हैं तो हम उसकी आज्ञाओं को मानेंगे। यदि हम परमेश्वर से प्रेम करते हैं, तो हम उन बातों से भी प्रेम करेंगे जो परमेश्वर को प्रतिबिम्बित करती हैं, जैसे उसकी व्यवस्था। इसे हम व्यवस्थाविवरण 5:10 और 6:5 और 6, मत्ती 22:37-40, यूहन्ना 14:15-24, और बहुत से अन्य स्थानों पर देखते हैं। देखें यूहन्ना 1 यूहन्ना 5:3 में क्या लिखता है:

> और परमेश्वर का प्रेम यह है कि हम उसकी आज्ञाओं को मानें। (1 यूहन्ना 5:3)

परमेश्वर के लिए प्रेम उसकी व्यवस्था को मानने से प्रकट होता है। इसलिए, जब हम उसकी व्यवस्था को तोड़ते हैं, तो हम परमेश्वर के लिए प्रेम में कार्य नहीं कर रहे हैं, हम पाप कर रहे हैं।

> बाइबल में परमेश्वर से प्रेम करने और परमेश्वर की आज्ञा मानने में बहुत घनिष्ठ संबंध है। मेरा मानना है कि पहली बात जिसे हमें स्पष्ट करना है वह यह है कि केवल परमेश्वर से प्रेम करना ही परमेश्वर से प्रेम करने की आज्ञा को पूरा नहीं करता है। एक कार्य-केन्द्रित, अनिवार्य नीरसता हो सकती है जो कभी मन में नहीं थी जब बाइबल ने कहा, यदि तुम मुझ से प्रेम करते हो, या मसीह ने कहा, यदि तुम मुझ से प्रेम करते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे। परन्तु यदि प्रेम है, यदि परमेश्वर के आनन्द में स्वयं को देने की स्वेच्छा है, तो उसका सर्वाधिक स्वाभाविक और प्रामाणिक प्रकटीकरण एक गहरा, इच्छुक और तत्पर आज्ञापालन होगा क्योंकि इसका आधार इस लालसा में है कि उस परमेश्वर को प्रसन्न करना है जिस से आप प्रेम करते हैं और जिस में आप मगन होते हैं; इसका आधार यह भरोसा है कि इस "परमेश्वर का मार्ग" आपके लिए उतना ही विश्वसनीय और अच्छा है जितना कि उसका अपना स्वभाव।
>
> डॉ. ग्लेन स्कोर्जी

जब हम परमेश्वर के प्रति प्रेम में कार्य करने से चूक जाते हैं, तो हम उसके विरूद्ध विद्रोह करने के द्वारा, उसकी व्यवस्था को तोड़ने के द्वारा, बुराई करने के द्वारा, प्रमाप से चूकने के द्वारा, उसके पवित्र, धर्मी और अच्छे चरित्र को ठेस पहुँचाने के द्वारा पाप करते हैं। परन्तु जब परमेश्वर के प्रति हमारा प्रेम हमें प्रेरित करता है, तो हम उसकी रूचियों और मांगों को अपने से ऊपर रखते हैं। और परिणामस्वरूप, हम बहुत से पापों से और अपने जीवनों में उनके भयानक परिणामों से बच सकते हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

परमेश्वर की व्यवस्था के उल्लंघन के रूप में पाप की इस परिभाषा को ध्यान में रखते हुए, आइए हम मानव जाति में पाप की उत्पत्ति को देखें।

पाप की उत्पत्ति

हम में से अधिकाँश लोग उत्पत्ति तीसरे अध्याय में लिखी घटनाओं से परिचित हैं, जब हमारे प्रथम पुरखों आदम और हव्वा ने भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल खाने के द्वारा परमेश्वर के विरूद्ध बलवा किया। बाइबल के विचार से, यह कोई अकेली घटना नहीं थी। इसके कारण सम्पूर्ण मानव जाति पाप की दोषी और पाप से भ्रष्ट हो गई। धर्मविज्ञानी सामान्यत: इसे मानव जाति का पाप में गिरना, या केवल पाप में गिरना कहते हैं।

उत्पत्ति 1:26-31 हमें बताता है कि जब परमेश्वर ने मनुष्यों को रचा, तो हम बहुत अच्छे थे। इस मामले में, अच्छे शब्द का अर्थ है कि हम बिल्कुल वैसे ही थे जैसा परमेश्वर चाहता था। हमारे प्रथम पुरखे नैतिक रूप से शुद्ध परमेश्वर के स्वरूप थे, परमेश्वर द्वारा रचे गए संसार को भरने और उस पर अधिकार करने के द्वारा उसकी सेवा के लिए बिल्कुल उपयुक्त थे।

जैसे पौलुस ने रोमियों 5:12 में संकेत दिया, मनुष्य के गिरने से पहले पाप नहीं था। हमने कभी पाप नहीं किया था, हमारी प्रवृत्ति पाप की नहीं थी, हम पाप से भ्रष्ट नहीं हुए थे, और हमारे अन्दर पाप नहीं था।

परन्तु उस पापरहित अवस्था में भी, हमारे पास पाप करने की क्षमता और अवसर दोनों थे। जब परमेश्वर ने आदम और हव्वा को रचा और उन्हें अदन की वाटिका में रखा, तो उसने उन पर बहुत सी बातों को प्रकट किया। परन्तु एक आज्ञा परमेश्वर की सेवा करने की उनकी इच्छा को परखने के लिए तीव्रता से आगे आई। उत्पत्ति 2:16 और 17 में, हम पढ़ते हैं कि परमेश्वर ने आदम और हव्वा को आज्ञा दी कि वे भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष को छोड़कर वाटिका के किसी भी वृक्ष के फल खा सकते हैं। और इस व्यवस्था को तोड़ने की संभावना ने आदम और हव्वा को पाप करने का अवसर दिया।

दुःखद रूप से, जैसा हम उत्पत्ति 3:1-6 में पढ़ते हैं, सांप ने हव्वा को बहका दिया कि वह उस निषेधित फल को खाए। फिर हव्वा ने उस फल में से आदम को भी दिया, और उसने भी खाया। आदम और हव्वा ने परमेश्वर की धर्मी व्यवस्था को तोड़ा और जान-बूझकर पाप को चुना। प्रकाशितवाक्य 12:9 संकेत देता है कि सांप वास्तव में शैतान था, और 1 तिमुथियुस 2:14 संकेत देता है कि हव्वा को बहकाया गया। परन्तु न तो शैतान की परीक्षाएँ और न ही हव्वा की मूर्खता हमारे प्रथम पुरखों के पाप का कोई बहाना हैं। वे दोनों भले की बजाय बुरे को चुनने के दोषी थे।

इन घटनाओं में हम फिर से देखते हैं कि पाप मूलत: परमेश्वर की व्यवस्था, उसकी प्रकट इच्छा का उल्लंघन है। जब कभी हम परमेश्वर की प्रकट व्यवस्था से अलग सोचते, बोलते या कार्य करते हैं, तो हम भलाई की बजाय बुराई को चुनते हैं। और चाहे धोखे या चालाकी से हम से पाप करवाया गया हो, फिर भी परमेश्वर हमें उस कार्य का जिम्मेदार ठहराता है जो हमने किया है। इसी कारण परमेश्वर के वचन को अपने दिलों में बैठाना सहायक है - न केवल इसलिए कि हम इसे जानें परन्तु इसलिए भी कि हम इससे प्रेम करें। जब हम परमेश्वर की व्यवस्था को जानते हैं, तो यह पाप कि पहचान करने में हमारी सहायता करती है जिस से हम धोखा न खाएँ। और जब हम परमेश्वर की व्यवस्था से प्रेम करते हैं, तो उसकी आज्ञा मानने का चुनाव करना आसान हो जाता है।

पाप की परिभाषा और उत्पत्ति को देखने के बाद, हम पाप के परिणामों को देखने के लिए तैयार हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

पाप के परिणाम

पवित्र-वचन संकेत देता है कि आदम और हव्वा के पाप करने के बाद, परमेश्वर ने न्याय किया और सम्पूर्ण मानव जाति को स्राप दिया। इस स्राप ने उनके अस्तित्व के प्रत्येक पहलू को प्रभावित किया। इसका परिणाम तुरन्त आत्मिक मृत्यु में निकला जिसके बारे में पूरे पवित्र-वचन में बताया गया है, जैसे यूहन्ना 5:24 और 25, इफिसियों 2:1-5, और कुलुस्सियों 2:13 और 14 में। इसने हमारे अस्तित्व, देह और आत्मा दोनों को भ्रष्ट किया, जो हम यिर्मयाह 17:9 और रोमियों 7:18-8:11 में देखते हैं। और इसका अन्त शारीरिक मृत्यु था, जैसा हम उत्पत्ति 3:19 और रोमियों 5:12 में पढ़ते हैं। अन्ततः, पाप के कारण मानव जाति पर नरक में अनन्त कष्ट का परमेश्वर का दण्ड आया, जैसा हम मत्ती 5:29 और 30 जैसे पद्यांशों से सीखते हैं।

सुप्रसिद्ध पासबान चार्ल्स स्पर्जन, जो 1834 से 1892 के बीच रहे, ने अपने सन्देश स्राप हटाया गया में आदम और हव्वा पर परमेश्वर के स्राप के बारे में बताया। देखें उन्होंने क्या कहा:

> उस स्राप में क्या शामिल है? इसमें मृत्यु शामिल है, इस देह की मृत्यु ... इसमें आत्मिक मृत्यु शामिल है, उस आन्तरिक जीवन की मृत्यु जो आदम में था - आत्मा का जीवन, जो अब चला गया है, और केवल पवित्र आत्मा द्वारा पुनः लाया जा सकता है ... और अन्त में, सबसे बदतर, इसमें शामिल है, वह अनन्त मृत्यु ... वह भयंकर, भयानक शब्द “नरक” जिसमें सब कुछ समा सकता है।

आदम और हव्वा के पाप के परिणाम सम्पूर्ण मानव जाति में भी फैल गए-उस प्रत्येक व्यक्ति में जिसने प्राकृति रूप से उन से जन्म लिया। हम पाप के इस वैश्विक प्रभाव को 1 राजा 8:46, रोमियों 3:9-12, गलातियों 3:22, और इफिसियों 2:3 जैसे पद्यांशों में देखते हैं। देखें पौलुस रोमियों 5:12 और 19 में आदम के पाप के बारे में क्या कहता है:

> इसलिए जैसा एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई, और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, इसलिए कि सबने पाप किया। ... एक मनुष्य के आज्ञा न मानने से बहुत लोग पापी ठहरे। (रोमियों 5:12,19)

जैसा हमने एक पिछले अध्याय में देखा, आदम सम्पूर्ण मानव जाति की वाचा का मुखिया था। और पौलुस ने सिखाया कि इस कारण, आदम का पाप उसके सारे वंशजों पर आया। और इसके परिणामस्वरूप, हम स्वभाव से पापी हैं। हम संसार में आत्मिक रूप से मृत अवस्था में, दर्द और कष्ट के अधीन, और शारीरिक मृत्यु की नियति लेकर आते हैं।

> इसे बढ़ा-चढ़ाकर कहना कठिन है; पाप के पूर्ण परिणाम को समझना भी हमारे लिए असम्भव है। परन्तु हमारा पाप सृष्टिकर्ता के विरूद्ध विद्रोह है। यह उसकी महिमा को चुराने का प्रयास है, यह उसकी व्यवस्था को तोड़ना है, यह उसकी महिमा से गिरना है। यह हर प्रकार से अपने आप को परमेश्वर के शत्रु बनाना है। पाप परमेश्वर के साथ हमारे संबंध को बिगाड़ देता है क्योंकि परमेश्वर पवित्र है। वह पाप को नहीं देख सकता है। उसकी पवित्रता के कारण, उसे पाप पर अपना क्रोध उण्डेलना पड़ता है। अतः, जब हम मानवीय पाप को देखते हैं, यह वह सब कुछ है जो हमें हमारी समस्या के बार में जानना है। यह वह सब कुछ भी है जो हमें स्वयं के बारे में जानने की आवश्यकता है। पाप एक मनोविज्ञान है जिस के द्वारा जो कुछ दर्पण में देखते हैं, और जो हम अपने आप के बारे में जानते हैं, उसे

> समझने में हमारी सहायता करता है। यह हमें इस बात की भी याद दिलाता है कि हमारे पास अपने आप को इस दुर्दशा से बचाने का कोई मार्ग नहीं है। केवल परमेश्वर ही यह कर सकता है, और वह इसे मसीह में करता है।
>
> डॉ. आर. अल्बर्ट मोह्लर, जूनियर

पाप की समस्या सचमुच भीषण है। पूरी मानव जाति पूर्णत: खोई हुई और दोषी है। हमारे पास अपने आप को छुड़ाने का कोई मार्ग नहीं है। निरन्तर परमेश्वर का दण्ड सहना हमारी नियति है। उसे पुन: प्रसन्न करने या हमारे पाप को सुधारने का हमारे पास कोई मार्ग नहीं है। परमेश्वर की अनुग्रहकारी क्षमा के अलावा, उद्धार की बिल्कुल भी आशा नहीं है।

पाप की समस्या को देखने के बाद, अब हमें क्षमा की हमारी चर्चा को दिव्य अनुग्रह की ओर मोड़ना चाहिए जो क्षमा को संभव बनाता है।

दिव्य अनुग्रह

अपनी करूणा में, परमेश्वर नहीं चाहता था कि सम्पूर्ण मानव जाति पाप के स्राप की अधीनता में रहे। उसने फिर मनुष्यों द्वारा पृथ्वी को भरने और उस पर अधिकार करने के लिए, और उसे अपनी उपस्थिति के योग्य राज्य में बदलने की योजना बनाई। इसलिए, पाप की समस्या को हल करने के लिए उसने एक उद्धारक को भेजा। और वह उद्धारक उसका पुत्र, यीशु मसीह था।

उद्धारक के रूप में, यीशु हमें दोष और भ्रष्टता से बचाता है; वह अपने साथ हमारा मेल-मिलाप कराता है; संसार को उसके पृथ्वी के राज्य में बदलने की हमारी योग्यता को वह पुन: हमें देता है। हमारे अपने उद्धार के लिए परमेश्वर की योजना केवल मनुष्य की योग्यता पर निर्भर नहीं है। यह परमेश्वर के अनुग्रह, उसकी प्रसन्नता पर निर्भर है, हमें हमारे विशेष प्रतिनिधि: प्रभु यीशु मसीह द्वारा दिया जाता है। जैसा हम रोमियों 3:23 और 24 में पढ़ते हैं:

> सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं। परन्तु उसके अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में है, सेंत मेंत धर्मी ठहराए जाते हैं। (रोमियों 3:23-24)

दिव्य अनुग्रह के कार्य के रूप में, क्षमा में त्रिएकता के तीनों व्यक्ति, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा शामिल हैं। और इसकी शुरूआत पिता से हुई।

पिता

> उद्धार त्रिएक है: पिता जो पहल करता है, पुत्र जो पूरा करता है, आत्मा जो लागू करता है। जब हम पिता-पुत्र के संबंध के बारे में सोचते हैं-हमें सोचना चाहिए कि हमारे उद्धार की योजना में पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा, तीनों व्यक्ति शामिल हैं। तीनों व्यक्ति अनुग्रह में और प्रेम में और करूणा में कार्य करने के साथ-साथ क्रोध और धार्मिकता और दण्ड को भी थामे रहते हैं। अत:, जब पिता को पहल करने वाले के रूप में देखा जाता है, तो वह इसे पुत्र और पवित्र आत्मा से अलग अकेले नहीं करता है।
>
> डॉ. स्टीफन वेलम

क्षमा की शुरूआत पिता से हुई क्योंकि उसी ने उसकी योजना बनाई। नया नियम स्पष्ट रूप से सिखाता है कि पिता ने पुत्र को संसार में भेजा और उसे उद्धारकर्ता नियुक्त किया। इसे हम यूहन्ना 3:16-18, प्रेरितों के काम 2:34-36, और इब्रानियों 3:1 और 2 में देखते हैं।

नया नियम यह भी सिखाता है कि पिता अपने लोगों के उद्धारकर्ता के रूप में यीशु की सामर्थ को अधिकृत किया, और क्रूस पर यीशु के बलिदान को पाप के भुगतान के रूप में स्वीकार करने का वायदा किया। हम पिता की इन भूमिकाओं के बारे में यूहन्ना 10:14-18, कुलुस्सियों 1:18-20 और इब्रानियों 2:10 जैसे पद्यांशों में पढ़ते हैं।

वास्तव में, रोमियो 3:25 कहता है कि पिता ने ही यीशु को बलिदान के रूप में चढ़ाया। देखें पौलुस वहाँ क्या लिखता है:

> परमेश्वर ने उसे प्रायश्चित ठहराया। (रोमियों 3:25)

पिता छुटकारे का महान शिल्पकार है। यह उसकी अनुग्रहकारी योजना और करूणामय इच्छा है कि हमारे पापों को क्षमा करे और हमें आशीष दे। और यह उसका अधिकार है जो उद्धार को संभव और निश्चित बनाता है।

> यह विचार कि क्रूस पर, यीशु लोगों के प्रति अपने स्वर्गीय पिता के क्रोध को इस तरह दूर करने का प्रयास कर रहा है कि यीशु तो प्रेमी है लेकिन पिता नहीं, यह वास्तव में यीशु मसीह के प्रायश्चित के कार्य में जो हो रहा है उसकी गलत समझ है। क्रूस पर यीशु का कार्य वास्तव में पिता के अपने लोगों के प्रति पूर्ववर्ति प्रेम की अभिव्यक्ति है। सोचें कि नये नियम में कितनी बार इस बात पर बल दिया गया है कि यीशु का संसार में आना और क्रूस उठाना वास्तव में पिता के प्रेम का परिणाम है। वह वचन जिसे हम में से अधिकाँश लोग संभवत: अपने मसीही जीवन में पहले वचन के रूप में याद करते हैं, यूहन्ना 3:16, बल देता है, "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उस ने अपना इकलौता पुत्र दे दिया ..." अब, इस वचन में किस के प्रेम पर बल दिया जा रहा है? मै किसी भी तरह यीशु के प्रेम को कम नहीं कर रहा हूँ, परन्तु उस पद्यांश में पुत्र को देने में स्वर्गीय पिता के प्रेम पर बल दिया जा रहा है।
>
> डॉ. जे. लिगन डंकन

पुत्र

दिव्य अनुग्रह जो हमारी क्षमा को पूर्ण करता है उस में पुत्र भी शामिल है, जो हमारा उद्धारकर्ता है।

पिता के वायदे की पूर्णता में, पुत्र को संसार में भेजा गया, चिर-प्रतिक्षित मसीहा, यीशु के रूप में देहधारण किया, ताकि मनुष्य के पाप का प्रायश्चित करे। इस शिक्षा को हम बहुत से स्थानों जैसे रोमियों 3:25 और 26, इब्रानियों 2:14-17, और 10:5-10 में पाते हैं।

यीशु ने पापियों की जगह क्रूस पर मरने के द्वारा पाप का प्रायश्चित किया। हमार पाप के कारण आए स्राप को उसने ग्रहण किया। और उसकी सिद्ध धार्मिकता हमें दी गई, ताकि हम पापी न गिने जाएँ, बल्कि परमेश्वर की आज्ञाकारी सन्तान माने जाएँ। कुछ थोड़े से स्थान जहाँ यह विषय आता है, उन्हें हम यूहन्ना 10:14-18, गलातियों 2:20, 2 कुरिन्थियों 5:21, और इब्रानियों 10:9-14 में पाते हैं। जैसे पौलुस ने इफिसियों 1:7 में लिखा:

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> हम को (यीशु मसीह) में उसके लोहू के द्वारा छुटकारा, अर्थात् अपराधों की क्षमा, उसके उस अनुग्रह के धन के अनुसार मिला है। (इफिसियों 1:7)

हमारे पाप क्षमा किए गए हैं इसलिए नहीं कि परमेश्वर उन्हें अनदेखा करता है, बल्कि इस कारण कि उसने मसीह में उन्हें दण्ड दिया। और इसीलिए पवित्र-वचन हमें हमारे उद्धार पर विश्वास करने के लिए प्रेरित करता है।

पिता और पुत्र के इन कार्यों पर निर्भर होने के अतिरिक्त, क्षमा पवित्र आत्मा के दिव्य अनुग्रह का भी परिणाम है।

पवित्र आत्मा

पवित्र आत्मा त्रिएकता का वह व्यक्तित्व है जो वास्तव में क्षमा को हमारे जीवनों में लागू करता है। पिता ने योजना बनाई और पुत्र ने प्रायश्चित को पूरा किया। परन्तु हमारे पाप वास्तव में तब तक क्षमा नहीं होते हैं जब तक कि पवित्र आत्मा अपना काम न करे।

जब हम विश्वास में आते हैं, तो पवित्र आत्मा उस समय तक हमारे द्वारा किए गए पापों को क्षमा करके परमेश्वर के साथ हमारा मेल-मिलाप कराता है। वह हमारी आत्माओं का नवीनीकरण करके हमें नया आत्मिक जीवन भी देता है, जैसा यीशु ने यूहन्ना 3:5-8 में बताया। प्रेरितों के काम 11:18 इस अनुभव को जीवन के लिए मन-फिराव कहता है क्योंकि नवीनीकरण और विश्वास में हमेशा दुख और हमारे पापों का अंगीकार शामिल होता है। इस विचार की बहुत से पद्यांशों में पुष्टि की गई है, जैसे 1 कुरिन्थियों 6:11 में।

और पवित्र आत्मा हमारे जीवन भर निरन्तर क्षमा लागू करता रहता है। वही हमारे विश्वास को बनाए रखता है, जो हमें प्रतिदिन मन-फिराव की ओर लाता है, और वह निरन्तर हमारे जीवन में क्षमा लागू करता है। इसे हम रोमियों 8:1-16 और गलातियों 5:5 जैसे स्थानों में देखते हैं। एक उदाहरण के रूप में, देखें पौलुस 2 थिस्सलुनीकियों 2:13 में क्या कहता है:

> परमेश्वर ने तुम्हें चुन लिया कि आत्मा के द्वारा पवित्र बनकर, और सत्य की प्रतीति करके उद्धार पाओ। (2 थिस्सलुनीकियों 2:13)

यहाँ, पौलुस ने लिखा कि मसीही आत्मा के कार्यों के द्वारा उद्धार पाते हैं जो हमें पाप और अधर्म से शुद्ध करते हैं, अर्थात्, आत्मा के कार्य जो हमारे जीवन में क्षमा लागू करते हैं। और जब हम निरन्तर सत्य में विश्वास करते हैं तो आत्मा निरन्तर हमारे जीवन में क्षमा को लागू करता है।

पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा सब हमारे प्रति उद्धार के अनुग्रह को दिखाते हैं। और इसके हमारे जीवनों के लिए कम से कम तीन निहितार्थ हैं। पहला, जब हम पाप करते हैं और परमेश्वर से क्षमा और उद्धार के अन्य पहलुओं की अपील करते हैं, तो तीनों दिव्य व्यक्तियों से अपनी प्रार्थना करने में हम सही हैं। दूसरा, जब हम इन आशीषों को पाते हैं, तो हमें परमेश्वर के तीनों व्यक्तियों को धन्यवाद देना चाहिए। और तीसरा, हम अपने उद्धार पर पूर्ण भरोसा कर सकते हैं, यह जानते हुए कि त्रिएकता के तीनों व्यक्ति हम से प्रेम करते हैं और हमारे उद्धार को सुनिश्चित करने के लिए कार्य करते हैं। पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा तीनों हमारे लाभ के लिए, पाप की समस्या को हल करने के लिए एक साथ मिलकर कार्य कर रहे हैं।

पाप की समस्या और दिव्य अनुग्रह के दृष्टिकोण से पापों की क्षमा को देखने के पश्चात्, हम क्षमा में व्यक्तिगत उत्तरदायित्व की भूमिका के बारे में बात करने के लिए तैयार हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

व्यक्तिगत उत्तरदायित्व

पवित्र-वचन स्पष्ट रूप से सिखाता है कि परमेश्वर प्रत्येक व्यक्ति के पापों को क्षमा नहीं करता है। कुछ लोगों को क्षमा किया जाता है, और कुछ को नहीं। यह सत्य क्यों है? मानवीय दृष्टिकोण से, कारण यह है कि क्षमा की प्रक्रिया में साधारण रूप से व्यक्तिगत उत्तरदायित्व का तत्व शामिल होता है। सामान्यत:, इन उत्तरदायित्वों को पूरा करने वाले लोगों को क्षमा किया जाता है, परन्तु जो इन उत्तरदायित्वों से जी चुराते हैं उन्हें नहीं।

व्यक्तिगत उत्तरदायित्व की भूमिका की हमारी चर्चा दो भागों में विभाजित होगी। पहला, हम कुछ शर्तों को बतायेंगे जिनकी पवित्र-वचन क्षमा के लिए साधारण आवश्यकताओं के रूप में पहचान करता है। और दूसरा, हम क्षमा को पाने के साधनों के बारे में बात करेंगे। आइए हम उन शर्तों से शुरू करें जिन्हें पवित्र-वचन क्षमा से जोड़ता है।

शर्तें

पवित्र-वचन क्षमा के लिए दो प्राथमिक शर्तों के बारे में बताता है। पहला, यह क्षमा के लिए परमेश्वर में विश्वास की आवश्यकता को बताता है। पवित्र-वचन में, विश्वास एक बहु-पक्षीय विचार है। परन्तु इस सन्दर्भ में, जब हम परमेश्वर में विश्वास की बात करते हैं, तो यह हमारे दमाग में है:

> परमेश्वर की दिव्य सर्वोच्चता की स्वीकृति, उसके प्रति वफादार समर्पण, और भरोसा कि हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह की खातिर वह हम पर करूणा करेगा।

यद्यपि आधुनिक श्रोताओं को यह अजीब लग सकता है, परन्तु पवित्र-वचन इस प्रकार के विश्वास को अक्सर- परमेश्वर का भय- कहता है।

उदाहरण के लिए, भजन 103:8-13 क्षमा की इस शर्त की प्रकृति का इस प्रकार वर्णन करता है:

> यहोवा दयालु और अनुग्रहकारी, विलम्ब से कोप करनेवाला और अति करूणामय है। व सर्वदा वादविवाद करता न रहेगा, न उसका क्रोध सदा के लिए भड़का रहेगा। उस ने हमारे पापों के अनुसार हम से व्यवहार नहीं किया, और न हमारे अधर्म के कामों के अनुसार हम को बदला दिया है। जैसे आकाश पृथ्वी के ऊपर ऊँचा है, वैसे ही उसकी करूणा उसके डरवैयों के ऊपर प्रबल है। उदयाचल अस्ताचल से जितनी दूर है, उस ने हमारे अपराधों को हम से उतनी ही दूर कर दिया है। जैसे पिता अपने बालकों पर दया करता है, वैसे ही यहोवा अपने डरवैयों पर दया करता है। (भजन 103:8-13)

ध्यान दें कि यहोवा का भय मानने वाले क्षमा पाते हैं, उनका अधर्म दूर किया जाता है।

यही विचार पूरी बाइबल में पाया जाता है। उदाहरण के लिए, इसे हम 2 इतिहास 30:18 और 19 में देखते हैं, यहोवा अपने खोजनेवालों को माफ करता है। मरकुस 4:12 में, यीशु ने संकेत दिया कि केवल वे लोग ही क्षमा के लिए परमेश्वर की ओर फिर सकते हैं जो उसे जानते और समझते हैं। और प्रेरितों के काम 26:17 और 18 में, क्षमा केवल उन लोगों को मिल सकती है जिनकी आँखें यहोवा की महिमा और सामर्थ के सत्य को देखने के लिए खोली गई हैं।

पवित्र-वचन में पाई जाने वाली क्षमा की दूसरी साधारण शर्त है टूटा हुआ होना। टूटे हुए होने का अर्थ है:

> पाप के बारे में वास्तविक दुख; परमेश्वर की व्यवस्था को तोड़ने पर सच्चा पश्चाताप।

यह केवल पकड़े जाने पर या दण्ड का दुख नहीं है, परन्तु अनुबन्ध कि परमेश्वर की शर्तें पवित्र हैं, और उसका सम्मान करने में असफल होने पर दिल का टूटना।

> पश्चाताप के अर्थ में, हम से, मुझ से और आप से, अपेक्षित है, कि हमें अपने पाप का अपराध-बोध हो। मैं बतशेबा के साथ पाप करने के बाद दाऊद के बारे में सोचता हूँ। हाँ उसने बतशेबा के विरूद्ध पाप किया था, और उसने बतशेबा के पति के विरूद्ध पाप किया था। उसने पुराने नियम की कलीसिया के विरूद्ध पाप किया था, परन्तु अन्ततः "मैं ने केवल तेरे ही विरूद्ध पाप किया है और तेरी दृष्टि में जो बुरा है वह किया है।" और आप उसके दिल के पश्चाताप को महसूस करते हैं। आधुनिक शब्द में, मैं सोचता हूँ, कि "टूटापन" है, और हमें वचन की जरूरत है कि पवित्र आत्मा के द्वारा, हमें तोड़े, हमें परमेश्वर की उपस्थिति में तोड़े।
>
> डॉ. डेरेक डब्ल्यू. एच. थॉमस

उदाहरण के लिए, 2 शमूएल अध्याय 11 में, दाऊद के मन में कोई पश्चाताप नहीं था जब उसने बतशेबा के साथ व्यभिचार किया, और फिर उसके गर्भधारण को छिपाने के लिए उसके पति उरियाह की मौत का इन्तजाम किया। बतशेबा के गर्भधारण के समय, अपने बच्चे के जन्म के समय तक, दाऊद को अपने कार्यों का कोई दुख नहीं था। उस समय, नातान नबी दाऊद के पाप के विषय में उसका सामना करता है, जैसा हम 2 शमुएल अध्याय 12 में पढ़ते हैं। केवल उस समय दाऊद ने अपने अपराध को माना और अपने आप को उसका दोषी माना। फिर, टूटेपन की आत्मा में, अपने गहरे दुख और पश्चाताप को अभिव्यक्त करने के लिए, उसने अपने पश्चाताप का महान भजन, भजन 51 लिखा। देखें दाऊद ने भजन 51 के पद 6 और 17 में क्या लिखा:

> तू हृदय की सच्चाई से प्रसन्न होता है ... टूटा मन परमेश्वर के योग्य बलिदान है; हे परमेश्वर, तू टूटे और पिसे हुए मन को तुच्छ नहीं जानता। (भजन 51:6,17)

दाऊद ने पहचान लिया कि परमेश्वर की क्षमा को पाने के लिए, उसे अपने पाप के बारे में परमेश्वर के दृष्टिकोण की आवश्यकता थी। उसे अपने कार्य से घृणा करने, और उस पर वास्तव में दुखी होने की आवश्यकता थी।

हम टूटेपन पर इसी बल को भजन 32 पद 1 और 2 में देखते हैं, जहाँ क्षमा उन लोगों को मिलती है जिन में कोई कपट नहीं है। इसे हम यशायाह 55:7 में पाते हैं, जहाँ परमेश्वर उन पर करूणा करता है जो अपने पाप को त्याग देते हैं। और इसे हम यिर्मयाह 5:3 में सुनते हैं, जहाँ उन लोगों को क्षमा से इनकार कर दिया जाता है जिनके हृदय उनके पाप के संबंध में हठीले हैं।

> मेरा विचार है कि हम परमेश्वर की पवित्रता पर ध्यान लगाने के, द्वारा अपने दिल में पश्चाताप को उत्पन्न करते हैं। इसे हम उत्पत्ति से प्रकाशितवाक्य तक बाइबल परमेश्वर के बारे में जो बताती है उस पर विचार करने के द्वारा कर सकते हैं कि वह अनाज्ञाकारी लोगों से संगति नहीं कर सकता, परन्तु जो अनाज्ञाकारिता का न्याय करता है, और अपराधियों को दण्ड देता है। यही परमेश्वर की पवित्रता का सार है। और जब हम परमेश्वर की पवित्रता पर विचार करते हैं, तो आइए पीछे मुड़कर हम अपने जीवन को देखें कि किस प्रकार हमने व्यवस्था को तोड़ा, आज्ञा

> का उल्लंघन किया, और परमेश्वर की बातों पर ध्यान न देते हुए उस से दूर हो गए, अपने जीवन को एक जंजाल बना लिया जिस से उसका अनादर होता है। अब पीछे मुड़कर देखें, वह सारा दण्ड जो मुझ पर पड़ना था वास्तव में मसीह पर पड़ा और उसने उसे सहा। और यह मुझे बताता है कि मेरे अपने पाप कितने दुःखद थे कि मेरे लिए उनका पश्चाताप केवल परमेश्वर के देहधारी पुत्र की मृत्यु के द्वारा किया जा सकता था। और जब मुझे महसूस होता है कि परमेश्वर की पवित्रता के प्रकाश में मेरे पाप कितने दुःखद हैं और उन्हें दूर करने के लिए क्या मांग की गई, तो पाप के प्रति मेरा दुःख तीव्र हो जाएगा, मेरा पश्चाताप गहरा होगा और उसके द्वारा बार-बार और बार-बार अपने आप को पवित्रता के लिए परमेश्वर को समर्पित करने का और उसे यह बताने का ईमानदार प्रयास उत्पन्न होगा कि मुझे कितना अधिक पछतावा है और वास्तव में मैं पापों से घृणा करता हूँ जिन्होंने पश्चाताप को आवश्यक बनाया।
>
> डाँ. जे. आई. पैकर

विश्वास की अवस्थाएँ और टूटा मन प्रत्येक व्यक्ति के जीवन के लिए महत्वपूर्ण है, चाहे हम विश्वासी हैं या नही। जिन लोगों ने मसीह को अपने प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में ग्रहण नहीं किया है, उनके लिए ये अवस्थाएँ परमेश्वर में आने और पापों की क्षमा पाने, और मसीह में नये जीवन की शुरूआत करने के अवसर हैं। और हम में से जो लोग पहले से ही मसीह से संबंधित हैं, उन्हें यह याद दिलाते हैं कि हमें निरन्तर विश्वास का जीवन जीना है, और हमारे द्वारा निरन्तर किए जाने वाले पापों के प्रति हमें वास्तव में दुखी होना है, ताकि हम निरन्तर क्षमा पा सकें और दैनिक आधार पर शुद्ध हो सकें।

अब जबकि हम देख चुके हैं कि क्षमा की अवस्थाओं में सामान्यत: कार्यकारी विश्वास और हमारा टूटा हुआ मन शामिल होता है, तो आइए हम उन साधारण साधनों को देखें जिनके द्वारा हम क्षमा को पा सकते हैं।

साधन

कई बार, मसीही अनुग्रह के साधन और अनुग्रह के आधार के बीच अन्तर को समझने में असफल हो जाते हैं। परिणामस्वरूप, वे गलती से यह सोचते हैं कि अनुग्रह को पाने, या हम पर अनुग्रह करने के लिए परमेश्वर पर दबाव डालने के लिए अनुग्रह के साधनों का प्रयोग किया जा सकता है। अत:, एक साधन और आधार के बीच अन्तर को पहचानना महत्वपूर्ण है। इस अन्तर को देखने में सहायता के लिए, कल्पना करें कि एक व्यक्ति को चोट से उबरने के लिए शारीरिक चिकित्सा की आवश्यकता है। चिकित्सा महंगी है, और उसका भुगतान एक दानकर्ता द्वारा किया जाता है। हम कह सकते हैं कि व्यक्ति को रोग से पूर्णत: उबारने वाला साधन चिकित्सा है। परन्तु इस स्वास्थ्य-लाभ का आर्थिक आधार दान है।

इन भिन्नताओं को हम संक्षेप में इस प्रकार कह सकते हैं कि आधार वह मूल या योग्यता है जिसमें कोई कार्य या परिणाम आधारित है, जबकि साधन वह औजार या यन्त्र है जो उस कार्य या परिणाम को सम्भव बनाता है।

जब परमेश्वर से क्षमा और अनुग्रह पाने की बात आती है, तो आधार हमेशा मसीह की योग्यता है, जिसे उसने अपने आज्ञाकारी जीवन और क्रूस की मृत्यु के द्वारा अर्जित किया। इसे हम मत्ती 26:28, कुलुस्सियों 1:13 और 14, और 1 यूहन्ना 2:12 जैसे स्थानों पर देखते हैं। क्षमा को सर्वदा अर्जित किया जाता है। परन्तु इसे मसीह के द्वारा अर्जित किया जाता है, हमारे द्वारा नहीं। और विश्ववास वह मूलभूत

साधन है जिसके द्वारा सारा अनुग्रह हमारे जीवनों में लागू किया जाता है। चाहे परमेश्वर के सम्मुख प्रत्यक्ष रूप से अभिव्यक्त किया जाए, या अनुग्रह के साधनों के द्वारा, विश्वास वह प्राथमिक औजार है जिसके द्वारा परमेश्वर हमारे जीवनों में अनुग्रह और अन्य आशीषों को लागू करता है।

पवित्र-वचन कई साधनों का वर्णन करता है जिनके द्वारा विश्वास सामान्यत: कार्य करता है। इस अध्याय में हमारे उद्देश्यों के लिए, इन अन्य साधनों को हम संक्षेप में प्रार्थना से शुरू करके दो सामान्य श्रेणियों में बाँट सकते हैं।

सम्पूर्ण पवित्र-वचन में, प्रार्थना को परमेश्वर से अनुग्रह और क्षमा मांगने के साधारण साधन के रूप में प्रस्तुत किया गया है। जैसे, बाइबल अंगीकार और मन फिराव की प्रार्थना को आमतौर पर विश्वास की अभिव्यक्ति बताती है जिनके द्वारा पवित्र आत्मा हमें क्षमा प्रदान करता है। इन प्रार्थनाओं की प्रभावशीलता को 1 राजा 8:29-40, भजन 32:1-11, प्रेरितों के काम 8:22, 1 यूहन्ना 1:9, और बहुत से अन्य स्थानों पर सिखाया गया है।

उन लोगों के लिए जिन्होंने अभी हाल ही में प्रभु को जाना है, अंगीकार और मन फिराव की विश्वासयोग्य प्रार्थनाएँ वे साधन हैं जिनके द्वारा पवित्र आत्मा आरम्भिक रूप में क्षमा और उद्धार को उनके जीवनों में लागू करता है। इसीलिए प्रेरितों के काम 11:18 में कलीसिया ने मन परिवर्तन को जीवन के लिए मन फिराव कहा। और सारे विश्वासियों के लिए, अंगीकार और मर फिराव की प्रार्थना अपने जीवनों में परमेश्वर के अनुग्रह को पाने के महत्वपूर्ण साधन बने रहते हैं। जैसा हम 1 यूहन्ना 1:9 में पढ़ते हैं:

> यदि हम अपने पापों को मान लें, तो (परमेश्वर) हमारे पापों को क्षमा करने, और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है। (1 यूहन्ना 1:9)

सुसमाचार का अद्‌भुत समाचार है कि मसीह ने हमारे लिए जो किया है उसके आधार पर हमारे पापों का मुफ्त में क्षमा करता है। और हम विश्वास के साथ केवल मांगने के द्वारा इस क्षमा को प्राप्त कर सकते हैं।

> आप जानते हैं, कि बहुत से लोग यह सोचते हैं कि यदि आप यह सिखाते हैं कि पापी के परमेश्वर के पास आकर केवल, “हे स्वर्गीय पिता, मुझे क्षमा कर,” कहने से परमेश्वर उन्हें क्षमा कर देगा, तो यह परमेश्वर के अनुग्रह को सस्ता बना देगा। परन्तु तथ्य यह है, कि यह परमेश्वर के अनुग्रह को ऊँचा उठाता है, इसलिए नहीं कि हमारा मन फिराव हमें बचाता है, या उसके आधार पर परमेश्वर हमें क्षमा करता है, परन्तु इसलिए कि परमेश्वर ने स्वयं अपने एकलौते पुत्र की अनन्त रूप से मूल्यवान और अगण्य रूप से महंगी मृत्यु के आधार पर हमारे लिए क्षमा और मेल-मिलाप का आधार तैयार किया है।
>
> डॉ. जे. लिगोन डंकन

> इस तथ्य ने कि यीशु मसीह, परमेश्वर का पुत्र, त्रिएकता में दूसरा व्यक्ति पृथ्वी पर आया और नम्रता और दासरूप में तीस वर्ष बिताए और फिर कष्ट सहा और क्रूस पर मरा-हमारे पापों के दण्ड का भुगतान करने के लिए क्रूस पर पाप के अनन्त कर्ज को उठा लिया। यह एक अनन्त मूल्य है, यह एक अनन्त कीमत है, बहुत बड़ी कीमत, हमारे पापों के लिए अनन्त कीमत। इसलिए यह सस्ता अनुग्रह नहीं है। यह अब तक प्राप्त किया गया सर्वाधिक महंगा अनुग्रह है। हम इसे मुफ्त उपहार के रूप में प्राप्त करते हैं, परन्तु केवल इस कारण कि यीशु ने अपना सब कुछ हमारे लिए दे दिया

डॉ. मार्क स्ट्रोस

> जो उसके पास आकर केवल "प्रभु, मुझे क्षमा कर," कहते हैं उन्हें क्षमा किया जाता है। इसलिए नहीं कि क्षमा की उनकी विनती बहुत कुलीन थी, इसलिए नहीं कि उन का मन फिराव बहुत अच्छा था, परन्तु इसलिए कि यीशु ने वह सब कर दिया है जो हमारे स्वर्गीय पिता के साथ संगति में पुन: लौटने के लिए हमारे लिए आवश्यक था।

डॉ. जे. लिगोन डंकन

अब, हमें यह बताने के लिए रूकना चाहिए कि अंगीकार और मन फिराव की प्रार्थनाओं के अतिरिक्त, जो क्षमा के साधारण साधनों के रूप में कार्य करती हैं, बिचवई की प्रार्थना कई बार क्षमा के असाधारण या असामान्य साधन के रूप में कार्य करती है। बिचवई को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है: मध्यस्थता; या किसी और की खातिर विनती या प्रार्थना।

पवित्र-वचन में लोगों द्वारा प्रभावी मध्यस्थता की प्रार्थना के बहुत से उदाहरण हैं। इसे हम गिनती 14:19 और 20 में देखते हैं, जहाँ मूसा की मध्यस्थता की प्रार्थना के जवाब में यहोवा ने इस्राएल के पाप को क्षमा कर दिया। इसे हम 2 इतिहास 30:18-20 में पाते हैं, जहाँ हिजकियाह की बिचवई के जवाब में यहोवा ने उन लोगों को माफ कर दिया जिन्होंने फसह की उचित तैयारी नहीं की थी। इसे हम अय्यूब 1:5 में देखते हैं, जहाँ हम सीखते हैं कि अय्यूब निरन्तर अपने बच्चों के लिए बिचवई के बलिदान चढ़ाया करता था। और इसे हम याकूब 5:14 और 15 में देखते हैं, जहाँ याकूब ने सिखाया कि कलीसिया के पुरनिए उन लोगों के लिए क्षमा को प्राप्त कर सकते हैं जिन्होंने पाप किया है। परमेश्वर विश्वासयोग्य लोगों की बिचवई के प्रार्थना के जवाब में हमेशा क्षमा प्रदान नहीं करता है। परन्तु बहुत बार वह ऐसा करता है।

और इस प्रकार की मानवीय बिचवई से बढ़कर, पुत्र और पवित्र आत्मा दोनों लोगों के लिए मध्यस्थता करते हैं। यीशु द्वारा की जाने वाली मध्यस्थता के बारे में यशायाह 53:12, रोमियों 8:34, और इब्रानियों 7:25 जैसे स्थानों पर बताया गया है। और आत्मा की मध्यस्थता के बारे में रोमियों 8:26 और 27 में सिखाया गया है।

क्षमा के साधनों की दूसरी सामान्य श्रेणी पवित्र संस्कार हैं, या जिन्हें आधुनिक प्रोटेस्टेन्ट कलीसियाएँ-विधान कहती हैं, मुख्यत: बपतिस्मा और प्रभु भोज।

अब, जब हम संस्कार शब्द का प्रयोग करते हैं, तो हमें इस बात को स्पष्ट करने की आवश्यकता है कि हम प्रभु भोज और बपतिस्मा के बारे में रोमन कैथोलिक कलीसिया के विचार की बात नहीं कर रहे हैं। बल्कि, संस्कार शब्द का प्रयोग बहुत सी प्रोटेस्टेन्ट संस्थाओं द्वारा ऐतिहासिक रूप से प्रभु भोज और बपतिस्मा के लिए किया जाता रहा है। ये समारोह विशेष, पवित्र विधान हैं जिन्हें परमेश्वर ने हमारे विश्वास को अभिव्यक्त करने और उसकी आशीषों को पाने के साधन के रूप में कलीसिया को उपलब्ध कराया। इन विधानों के कार्य विवरणों के बारे में प्रोटेस्टेन्ट परम्पराओं में मतभेद हैं। परन्तु वे सब इस बात से सहमत हैं कि ये किसी तरह विशेष हैं।

कई बार मसीहियों को सन्देह होता है जब वे दूसरों को प्रभु भोज और बपतिस्मा को क्षमा के साधन के रूप में बताते हुए सुनते हैं। अत:, इस बात पर बल देना महत्वपूर्ण है कि हम यह नहीं कह रहे हैं कि इन विधानों में ऐसी कोई योग्यता नहीं है जो उन्हें प्रभावी बनाती है। ये क्षमा का आधार नहीं हैं।

साथ ही, बाइबल सिखाती है कि जब हम प्रभु भोज और बपतिस्मा के द्वारा अपने विश्वास को अभिव्यक्त करते हैं, तो पवित्र आत्मा हमारे जीवनों में क्षमा को लागू करने के लिए इन विधानों का प्रयोग करता है।

बपतिस्मा को मरकुस 1:4, प्रेरितों के काम 2:38, रोमियों 6:1-7, और कुलुस्सियों 2:12-14 जैसे पद्यांशों में अनुग्रह का साधन बताया गया है।

एक उदाहरण के रूप में, प्रेरितों के काम 22:16 में पौलुस से कहे गए हनन्याह के शब्दों को सुनें:

> अब क्यों देर करता है? उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल। (प्रेरितों के काम 22:16)

इन निर्देशों में, हनन्याह ने संकेत दिया कि बपतिस्मा के द्वारा पौलुस के पापों को क्षमा किया या-धो दिया जाएगा।

अब, निस्सन्देह, बपतिस्मा क्षमा का एक आवश्यक साधन नहीं है। हमें दूसरे तरीकों से भी क्षमा मिल सकती है। जैसे, यीशु के साथ क्रूस पर चढ़ाए गए, विश्वास करने वाले उस डाकू ने कभी बपतिस्मा नहीं लिया था। फिर भी, लूका 23:43 संकेत देता है कि उसे क्षमा किया गया और उसने उद्धार पाया। अत:, हमें यह सोचने की गलती नहीं करनी चाहिए कि क्षमा और उद्धार केवल उन लोगों के लिए उपलब्ध हैं जिन्होंने बपतिस्मा ले लिया है। फिर भी, पवित्र-वचन इसे पूर्णत: स्पष्ट करता है कि बपतिस्मा साधारणत: हमारे जीवनों में क्षमा को लागू करने के साधन के रूप में कार्य करता है।

और प्रभु भोज का भी यही सत्य है। पौलुस ने स्पष्ट रूप से सिखाया कि प्रभु भोज में भाग लेना मसीह की मृत्यु के लाभों, जैसे क्षमा को प्राप्त करने का माध्यम है। देखें 1 कुरिन्थियों 10:16 में उसने क्या लिखा है:

> वह धन्यवाद का कटोरा, जिस पर हम धन्यवाद करते हैं, क्या मसीह के लोहू की सहभागिता नहीं? वह रोटी जिसे हम तोड़ते हैं, क्या वह मसीह की देह की सहभागिता नहीं? (1 कुरिन्थियों 10:16)

ये अलंकारिक प्रश्न थे। पौलुस की पत्रियों को पढ़ने वाला प्रत्येक व्यक्ति जानता था कि उनका उत्तर था, -हाँ, निस्सन्देह। विश्वास के साथ प्रभु भोज में भाग लेने के द्वारा हम मसीह के साथ एक होते हैं।

पापों की क्षमा उद्धार की एक महान आशीष है जिसे हम अपने सम्पूर्ण मसीही जीवन के दौरान अनुभव करते हैं। चाहे हम नये मसीही हों, या जीवन भर से विश्वासी रहे हों, क्षमा मसीह के साथ हमारी चाल का एक सतत् पहलू है। और इसके परिणामस्वरूप बहुत सी अन्य आशीषें भी मिलती हैं।

जाँन वेस्ली, मेथोडिस्ट कलीसिया के संस्थापक जो 1703 से 1791 के बीच रहे, ने अपने सन्देश संख्या 26 में क्षमा के बारे में बताया, जिस में उन्होंने पहाड़ी उपदेश की व्याख्या की। देखें कि उन्होंने वहाँ क्या कहा:

> पापों की क्षमा पाते ही, हम इसी प्रकार उन के साथ बहुत कुछ पाते हैं जो विश्वास के द्वारा, जो उस में है, पवित्र किए गए हैं। पाप अपनी सामर्थ खो चुका है: इसका उन पर कोई अधिकार नहीं है जो अनुग्रह, यानि, परमेश्वर की प्रसन्नता के अधीन हैं। क्योंकि जो मसीह में हैं उन पर कोई दण्ड की आज्ञा नहीं है, इसलिए वे पाप के साथ-साथ ग्लानि से भी मुक्त किए गए हैं। व्यवस्था की धार्मिकता उनमें पूरी हुई है, और वे शरीर के अनुसार नहीं परन्तु आत्मा के अनुसार चलते हैं।

> मैं सोचता हूँ पापों की क्षमा, एक प्रकार से, मसीहियों के रूप में हमारी सर्वाधिक अनमोल वास्तविकता है। मूलभूत रूप से हमारे पापों को क्षमा करने का अर्थ है परमेश्वर, हमारे सृष्टिकर्ता के साथ सही संबंध में रहना। आज जब हम संसार को देखते हैं, हम पाते हैं कि लोग अर्थ, महत्व, उद्देश्य की खोज में हैं। और हमारी

> संस्कृति में अत्यधिक असमंजस है। जीवन क्या है? जीने का कारण क्या है? मैं यहाँ क्यों हूँ? और इसलिए लोग अर्थ और महत्व को खोजने के लिए हर तरह से प्रयास करते हैं-फिर चाहे वे अपनी नौकरी का पीछा करें या लैंगिकता या मादक पदार्थों का। मेरा मतलब है कि लोग खुशी और आनन्द को पाने के लिए हर तरह के स्थानों और मार्गों में प्रयास कर रहे हैं। परन्तु सुसमाचार हमें बताता है कि मनुष्यों के रूप में हमारी मूलभूत आवश्यकता अपने सृष्टिकर्ता के साथ सही संबंध में रहना है, उसके साथ जिसने हमें बनाया है। सुसमाचार बताता है कि परमेश्वर ने अपने पुत्र, यीशु मसीह को भेजा, कि वह हमारे पापों का प्रायश्चित करे, परमेश्वर के क्रोध को दूर करे। परमेश्वर ने अपने प्रेम में अपने पुत्र को भेजा कि हमारे पाप क्षमा हो सकें, ताकि यदि हम उस पर भरोसा करें तो हमारे पाप क्षमा हो सकें। और जब हम उस अनुभव पर आते हैं, जब हम ऐसी क्षमा के लिए यीशु मसीह की ओर फिरते हैं तो एक अतुल्य शान्ति का अहसास होता है, संसार के साथ सही होने का अहसास क्योंकि यह वास्तव में संसार के साथ सही होना है। हम अचानक महसूस करते हैं कि हमें इसके लिए ही बनाया गया है। हमें परमेश्वर के साथ सही संबंध में रहने के लिए बनाया गया है। उस पल हम पहचानते हैं।
>
> डॉ. टॉम श्रेनर

अब जबकि हम पापों की क्षमा की धर्मशिक्षा को देख चुके हैं, तो हम विश्वास के अगले सूत्र को देखने के लिए तैयार हैं: देह का पुनरूत्थान।

पुनरूत्थान

प्रेरितों के विश्वास-कथन के इन शब्दों को याद करें:

> मैं...
>
> देह के पुनरूत्थान में विश्वास करता हूँ।

इस बिन्दू पर हमें स्पष्ट होने की आवश्यकता है, कि विश्वास-कथन यीशु के पुनरूत्थान के बारे में बात नहीं कर रहा है। यीशु का पुनरूत्थान विश्वास-कथन में पहले आता है जब यह कहता है कि यीशु मृतकों में से तीसरे दिन जी उठा। जब विश्वास-कथन देह के पुनरूत्थान के बारे में बात करता है, तो इसके मन में सामान्य पुनरूत्थान है-मसीह के महिमा में आगमन पर सारे लोगों का पुनरूत्थान।

हम देह के सामान्य पुनरूत्थान को तीन चरणों में देखेंगे। पहला, हम स्राप को देखेंगे जिसके परिणामस्वरूप हमारी देह में मृत्यु आती है। दूसरा, हम बतायेंगे कि मसीही सुसमाचार हमारी देहों के लिए जीवन की पेशकश करता है। और तीसरा, हम देखेंगे कि अन्त में किस प्रकार हमारी देह का छुटकारा होगा। आइए स्राप से शुरू करें जो हमारी देह में मृत्यु को लाता है।

स्राप

जैसा हमने पूर्ववर्ति अध्याय में देखा, परमेश्वर ने मनुष्यों को शारीरिक देहों और गैर-शारीरिक प्राणों से बनाया। इब्रानियों 4:12 और 1 थिस्सलुनीकियों 5:23 के आधार पर, कुछ परम्पराओं का मानना है कि प्रत्येक मनुष्य में प्राण के अतिरिक्त आत्मा भी होती है। परन्तु लगभग 200 ऐसे वचन हैं जिन में हमारे अस्तित्व के सारे आन्तरिक, गैर-शारीरिक पहलुओं को सम्पूर्ण रूप में बताने के लिए इनमें से किसी एक शब्द का प्रयोग किया गया है। अत:, अधिकाँश मसीहियों का निष्कर्ष है कि प्राण और आत्मा, दोनों शब्द एक ही वास्तविकता को बताते हैं, और मनुष्य मुख्यत: केवल दो भागों से निर्मित हैं: देह और आत्मा।

पाप में गिरने से पूर्व, हमारी देह और हमारी आत्मा पर पाप और इसकी भ्रष्ट शक्तियों का कोई प्रभाव नहीं था। परन्तु जब आदम और हव्वा पाप में गिर गए, तो पाप ने न केवल उनकी आत्माओं, बल्कि उनकी देहों को भी भ्रष्ट कर दिया। और उनकी देहों के दूषित होने का अन्तिम परिणाम उनकी शारीरिक मृत्यु थी। उत्पत्ति 3:19 में आदम पर परमेश्वर के स्राप को देखें:

> तू अपने माथे के पसीने की रोटी खाया करेगा, और अन्त में मिट्टी में मिल जाएगा; क्योंकि तू उसी में से निकाला गया है, तू मिट्टी तो है और मिट्टी ही में फिर मिल जाएगा। (उत्पत्ति 3:19)

जब आदम और हव्वा ने परमेश्वर के विरूद्ध पाप किया, तो उसने दोनों को स्राप दिया। और उसके स्राप का एक भाग था कि वे मरणहार होंगे। वे अन्त में मर कर मिट्टी में मिल जायेंगे। और चूंकि सारे मनुष्य आदम और हव्वा की सन्तान हैं, इसलिए हम सब उसी दोष के साथ उत्पन्न होते हैं। जैसे पौलुस ने रोमियों 5:12 में लिखा:

> इसलिए जैसा एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई, और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, इसलिए कि सबने पाप किया। (रोमियों 5:12)

पाप ने आदम और हव्वा को आत्मिक और शारीरिक दोनों प्रकार से प्रभावित किया। और हम उनकी प्राकृतिक सन्तान हैं, इसलिए हम पर भी वही शाप है। हमारी आत्माएँ इस संसार में ऐसी अवस्था में प्रवेश करती हैं जिसे बाइबल आत्मिक मृत्यु कहती है। हम परमेश्वर के दण्ड के अधीन हैं, और हमने उसे प्रसन्न करने की सारी योग्यता को खो दिया है। इसके बारे में हम रोमियों 5:12-19, और 8:1-8 जैसे पद्यांशों में पढ़ते हैं।

और आदम और हव्वा के समान ही, हमारी देह भी पाप के कारण दूषित हो गई है। इसका परिणाम शारीरिक कष्ट, बीमारी, और अन्तत: मृत्यु है। पौलुस ने रोमियों 6:12-19, और 7:4-25 में इसके बारे में बात की। पाप हमारे सम्पूर्ण अस्तित्व, देह और आत्मा को भ्रष्ट कर देता है। परन्तु परमेश्वर का अद्‌भुत वायदा है कि मसीह में उद्धार हमारी आत्माओं और देहों दोनों को छुटकारा प्रदान करता है।

> मसीहियों को मानवीय मृत्यु को साधारण होने के रूप में नहीं देखना चाहिए। हम अपनी भाषा में अक्सर इस प्रकार का विचार प्रकट करते हैं। कई बार अन्तिम संस्कार के समय हम किसी के बारे में कहते हैं, “उसने एक अच्छा और लम्बा जीवन बिताया।” और केवल किसी बच्चे या किसी बीस या तीस साल के व्यक्ति की मृत्यु पर ही संभवत: हम यह कहते हैं, “ओह, यह भयानक है।” नहीं, यह वास्तव में मानवीय मृत्यु के बारे में उचित मसीही विचार नहीं है। मानवीय मृत्यु का मसीही विचार हर मृत्यु को असामान्य मानता है। हमें शुरूआत से सदा तक जीने के लिए बनाया गया था। आप सोचें कि कैसे, सृष्टि के अभिलेख में भी सातवें

> दिन, परमेश्वर विश्राम करता है। वह अपनी सृष्टि के साथ पूर्ण आनन्द में प्रवेश करेगा। तब हम उसकी महिमा के लिए जीते और सृष्टि के नियम को पूरा करते। हमें कभी मरने के लिए नहीं बनाया गया था। परन्तु इसके बजाय, पाप की मजदूरी, इस संसार में पाप का प्रवेश, उत्पत्ति 3, पाप का परिणाम, प्रेरित पौलुस कहता है और उत्पत्ति 2 में बताया गया है, कि मृत्यु है। मृत्यु, जो शारीरिक है; मृत्यु जो आत्मिक भी है।
>
> डॉ. स्टिफन वेलम

एक अर्थ में, शारीरिक मृत्यु विश्वासियों के लिए एक आशीष है क्योंकि हम सीधे मसीह की उपस्थिति में चले जाते हैं। परन्तु मूलभूत अर्थ में, शारीरिक मृत्यु दुःखद है। यह एक वैश्विक मानवीय अनुभव है, परन्तु यह भयानक रूप से अप्राकृतिक भी है। परमेश्वर ने मनुष्यों को मरने के लिए नहीं बनाया; उसने हमें जीने के लिए बनाया था। और हमारा उद्धार तब तक पूर्ण नहीं होगा जब तक कि मसीह लौटकर हमारी देहों का छुटकारा न करे।

हमारी देहों में मृत्यु लाने वाले शाप को देखने के बाद, आइए हम सुसमाचार के पहलुओं की ओर फिरें जो हमारे पुनरूत्थान को सुनिश्चित करते हैं।

सुसमाचार

हम में से कितने लोग ऐसे मसीहियों को जानते हैं जिनका विश्वास है कि वे अनन्तकाल तक स्वर्ग में बिना देह की आत्माओं के रूप में रहेंगे? संभवत: कुछ से ज्यादा। यह सुनने में अजीब लग सकता है, कि मृतकों के पुनरूत्थान की धर्मशिक्षा कुछ आधुनिक कलीसियाओं में लगभग पूर्णत: अनजानी है। और इसका एक कारण है कि मसीही अक्सर अपनी मानवीय देहों के महत्व को समझने में असफल हो जाते हैं। परन्तु पवित्र-वचन स्पष्ट रूप से इस अच्छी खबर को सिखाता है कि मसीह के आगमन पर न केवल हमारी आत्माएँ, बल्कि हमारी देह भी महिमा पायेंगी।

हम तीन मुद्दों को देखने के द्वारा इस विचार को देखेंगे कि दैहिक पुनरूत्थान सुसमाचार का हिस्सा है। पहला, हम इस धर्मशिक्षा की पुराने नियम की पृष्ठभूमि का वर्णन करेंगे। दूसरा, हम देखेंगे कि नये नियम में इसकी स्पष्ट घोषणा की गई है। और तीसरा, हम विश्वासियों के पुनरूत्थान और यीशु के पुनरूत्थान के बीच संबंध के बारे में बात करेंगे। आइए हम पुराने नियम से शुरू करते हैं।

पुराना नियम

बहुत से आधुनिक मसीही इसे नहीं पहचानते हैं, परन्तु सुसमाचार शब्द, जिसका अर्थ है अच्छा समाचार, वास्तव में पुराने नियम से आता है। विशेषत:, इसे हम यशायाह 52:7 और 61:1, और नहूम 1:15 में पाते हैं। एक उदाहरण के रूप में, यशायाह 52:7 को देखें:

> पहाड़ों पर उसके पाँव क्या ही सुहावने हैं जो शुभ समाचार लाता है, जो शान्ति की बातें सुनाता है और कल्याण का शुभ समाचार और उद्धार का सन्देश देता है, जो सिय्योन से कहता है, तेरा परमेश्वर राज्य करता है। (यशायाह 52:7)

पुराने नियम में, शुभ समाचार या सुसमाचार था कि परमेश्वर अपने और उनके शत्रुओं को हराकर अपने लोगों की रक्षा करेगा। संकीर्ण अर्थ में, सुसमाचार यह था कि परमेश्वर अपने लोगों को पृथ्वी पर उनके शत्रुओं के दमन से छुटकारा देगा। परन्तु वृहत्तर अर्थ में, यह शुभ समाचार था कि परमेश्वर उन सारे

शापों को उलट देगा जो आदम और हव्वा के पाप में गिरने के कारण आए। वह अपने महिमामय स्वर्गीय राज्य को पूरी पृथ्वी पर स्थापित करेगा, और अन्ततः हर व्यक्ति को आशीष देगा जिसने उसमें भरोसा रखा था।

निस्सन्देह, पुराने नियम में परमेश्वर द्वारा उपलब्ध करवाया गया उद्धार मसीह की भावी जीत पर आधारित था। यद्यपि अब तक मसीह पाप के लिए मरने नहीं आया था, परन्तु उसने पहले से ही अपने लोगों की खातिर मरने का वायदा किया था। और वह वायदा उनके उद्धार को सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त था। वास्तव में, पुराने नियम में उद्धार की प्रत्येक आशा मसीह और उसके द्वारा कार्य की समाप्ति की ओर संकेत करती थी।

देखें इब्रानियों 10:1-5 पुराने नियम के बलिदानों को किस प्रकार वर्णन करता है:

> क्योंकि व्यवस्था जिस में आनेवाली अच्छी वस्तुओं का प्रतिबिम्ब है, पर उन का असली स्वरूप नहीं... क्योंकि अनहोना है कि बैलों और बकरों का लोहू पापों को दूर करे। इसी कारण मसीह जगत में आते समय कहता है, कि बलिदान और भेंट तू ने न चाही, पर मेरे लिए एक देह तैयार किया। **(इब्रानियों 10:1-5)**

इब्रानियों के लेखक ने संकेत दिया कि पुराने नियम के बलिदान केवल उस वास्तविकता की छाया थे जो बाद में मसीह में पूर्ण हुई। पशुओं का बलिदान कभी भी पाप का सिद्ध प्रायश्चित नहीं था क्योंकि परमेश्वर की मांग थी कि मनुष्य के पाप का दण्ड मनुष्य की मृत्यु से मिले। परन्तु वे यीशु की ओर संकेत कर सकते थे और उन्होंने ऐसा किया, जिस की पूर्णतः मानवीय मृत्यु पाप के लिए पर्याप्त रूप से सिद्ध और प्रभावी प्रायश्चित था।

सुसमाचार के भाग के रूप में पुराने नियम में, परमेश्वर के लोगों को सिखाया गया कि एक दिन आ रहा है जब परमेश्वर सारे मृतकों को जिन्दा करेगा और उनके कार्यों के लिए उनका न्याय करेगा। जिन्होंने परमेश्वर पर विश्वास रखते हुए धार्मिकता का जीवन बिताया, वे अनन्त आशीष को प्राप्त करेंगे। परन्तु जिन्होंने परमेश्वर के विरूद्ध बलवा किया उन्हें अनन्तकालीन दण्ड मिलेगा। ये दोनों परिणाम दैहिक रूप में अनन्तकाल तक रहेंगे। मसीही धर्मविज्ञानी इस घटना को आमतौर पर अन्तिम न्याय कहते हैं।

जैसा हमने एक पिछले अध्याय में देखा, प्रेरितों का विश्वास-कथन अन्तिम न्याय को इन शब्दों में बताता है:

> जहाँ से वह जीवितों और मृतकों का न्याय करने के लिए आएगा।

इस विचार का संभवतः सबसे स्पष्ट कथन कि अन्तिम न्याय में देह का पुनरूत्थान शामिल है, दानिय्येल अध्याय 12 में देखा जा सकता है, जहाँ एक स्वर्गदूत ने दानिय्येल पर प्रकट किया कि भविष्य में परमेश्वर उसके लोगों को दमन से छुटकारा देगा।

देखें दानिय्येल 12:1 और 2 में दानिय्येल से क्या कहा गया:

> उस समय तेरे लोगों में जितनों के नाम परमेश्वर की पुस्तक में लिखे हुए हैं, वे बच निकलेंगे। और जो भूमि के नीचे सोए रहेंगे उन में से बहुत से लोग जाग उठेंगे, कितने तो सदा के जीवन के लिए, और कितने अपनी नामधराई और सदा तक अत्यन्त घिनौने ठहरने के लिए। **(दानिय्येल 12:1-2)**

दानिय्येल ने विशेषतः देह के पुनरूत्थान की ओर संकेत किया जब उसने भूमि के नीचे सोए हुओं के बारे में बात की। आत्माएँ भूमि के नीचे नहीं सोती हैं; देह सोती है। और उन देहों को अन्तिम न्याय के दिन जिन्दा किया जाएगा।

यशायाह ने भी न्याय के दिन के बारे में बताया जिस में सामान्य पुनरूत्थान शामिल है। देखें उसने यशायाह 26:19-21 में क्या लिखा है:

> तेरे मरे हुए लोग जीवित होंगे, मुर्दे उठ खड़े होंगे। हे मिट्टी में बसनेवालो, जागकर जयजयकार करो !... पृथ्वी अपने मुर्दों को लौटा देगी।...देखो, यहोवा पृथ्वी के निवासियों को अधर्म का दण्ड देने के लिए अपने स्थान से चला आता है। **(यशायाह 26:19-21)**

एक बार फिर, हम देखते हैं कि मृतक, जो मिट्टी में बसते हैं, वे नये जीवन के साथ अपनी कब्रों में से उठ खड़े होंगे, जैसे कि पृथ्वी उन्हें जन्म दे रही हो। और यह न्याय के सन्दर्भ में होगा, जब यहोवा पृथ्वी के निवासियों को उनके पापों का दण्ड देने के लिए आएगा।

मृतकों के पुनरूत्थान की धर्मशिक्षा कई पुराने नियम के पद्यांशों में भी निहित है जो अन्तिम न्याय और प्रतिफल के सन्दर्भ में अधोलोक से छुटकारे के बारे में बताते हैं, जैसे भजन 49:7-15, भजन 73:24-28 इत्यादि। और अय्यूब 19:25-27 में, अय्यूब ने निश्चयपूर्वक अपने विश्वास को अभिव्यक्त किया कि जब यहोवा न्याय के दिन पृथ्वी पर खड़ा होगा तो पुनरूत्थान प्राप्त करके उसका दर्शन पाएगा।

> भावी पुनरूत्थान और न्याय पुराने नियम में इतना स्पष्ट नहीं है जितना कि नये नियम में। परन्तु निश्चित रूप से पुराने नियम में इस बात के संकेत हैं कि यह होने वाला है। उदाहरण के लिए यशायाह एक ऐसे समय के बारे में बताता है जब मृतक जी उठेंगे, अपनी कब्रों से बाहर आ जायेंगे। दानिय्येल भी ऐसे ही एक समय के बारे में बताता है जब मृतक जी उठेंगे, धर्मी और दुष्ट दोनों अनन्त न्याय के लिए जी उठेंगे। अत: यह एक ऐसा विश्वास है जो कुछ यहूदियों के बीच उत्पन्न हुआ, सारे यहूदियों में नहीं। यीशु के समय के फरीसी पुनरूत्थान में विश्वास करते थे। सदूकी पुनरूत्थान पर विश्वास नहीं करते थे। परन्तु यीशु स्वयं, जब सदूकी उसके पास आकर पूछते हैं कि क्या ऐसा है, और वे इसे मूर्खता साबित करने के लिए उस से एक चालाकी भरा सवाल पूछते हैं, तो यीशु वास्तव में उस पद्यांश को उद्धृत करता है जब परमेश्वर कहता है: "मैं अब्राहम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर हूँ।" और यीशु कहता है, "(परमेश्वर) मरे हुओं का नहीं, बल्कि जीवितों का परमेश्वर है।" जब परमेश्वर किसी व्यक्ति के साथ वाचा का संबंध बनाता है, तो यह वास्तव में उस व्यक्ति के साथ निजी संबंध है और यदि अब्राहम मरने के बाद, यदि फिर कभी न जी उठने वाला हो, तो यह कहने का कोई मतलब नहीं है कि परमेश्वर ने अब्राहम के साथ सदाकाल की वाचा बान्धी है। अत:, इसका मतलब है कि नया नियम अपरिवर्तनीय रूप से पुनरूत्थान की धर्मशिक्षा के प्रति समर्पित है। और, निस्सन्देह, यीशु का पुनरूत्थान उस पर अन्तिम मोहर लगाता है।
>
> डॉ. जॉन एम. फ्रेम

यह देखने के बाद कि सामान्य पुनरूत्थान पुराने नियम में सुसमाचार का हिस्सा था, अब आइए हम देखें कि यह नये नियम में भी सुसमाचार के सन्देश का हिस्सा था।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

नया नियम

पुराने नियम और नये नियम की सुसमाचार घोषणाओं में सबसे बड़ा अन्तर है कि नये नियम में, उद्धारकर्ता अन्ततः आ चुका था। वह अन्ततः इतिहास में यीशु नासरी के रूप में प्रकट हो गया था। परमेश्वर अब अपने पुत्र, यीशु के द्वारा राज्य कर रहा था। इसी कारण नया नियम अक्सर इस बात पर बल देता है कि यीशु प्रभु है, यानि वह राज्य करने वाला राजा है। इसे हम लूका 2:11, प्रेरितों के काम 2:36, रोमियों 10:9, और 1 कुरिन्थियों 12:3 जैसे स्थानों पर देखते हैं।

> उद्धार पुराने और नये नियम में समान रूप से आता है, परमेश्वर के प्रबन्ध के वायदे पर विश्वास के द्वारा। पुराने नियम में विश्वास और नये नियम में विश्वास में परमेश्वर के प्रति विश्वास में अन्तर नहीं है, बल्कि वह विशिष्टता जिसके द्वारा वायदा दिया गया है। पुराने नियम में विश्वास मूलतः पूरे होने वाले वायदे का इन्तजार करना है। नये नियम के बाद से विश्वास चिन्तन करते हुए पीछे की ओर क्रूस को देखना है, एक वायदा जो पूरा हो गया है। अतः इन दोनों में परमेश्वर की ओर निर्देशित उसके प्रबन्ध के लिए विश्वास शामिल है, जिसे वह करेगा और हम पूरा नहीं कर सकते हैं।
>
> — डॉ. रोबर्ट जी. लिस्टर

यीशु में, उद्धार के पुराने नियम के सारे वायदे पूरे हो रहे हैं। जैसा हमने इब्रानियों 10:1-5 में देखा, उसकी मृत्यु वह यथार्थ है जिसकी ओर पुराने नियम के बलिदान संकेत करते हैं। और रोमियों 15:8-13, और गलातियों 3:16 में, पौलुस ने सिखाया कि यीशु का सुसमाचार पुराने नियम में पितरों से किए गए वायदों को पूर्ण करता है। इस प्रकार तथा और भी बहुत सी रीतियों में, नया नियम पुराने नियम के सुसमाचार-शुभ समाचार की पुष्टि करता है कि विश्वास के द्वारा अनुग्रह से अपने लोगों को उद्धार देने के लिए दिव्य राजा अन्ततः आ गया है।

यीशु ने सिखाया कि सामान्य पुनरूत्थान अन्तिम न्याय के समय होगा। उदाहरण के लिए, मत्ती 22:23-32 और लूका 20:27-38 में, उसने सदूकियों द्वारा सामान्य पुनरूत्थान के इनकार का खण्डन किया। लूका 14:13 और 14 में, उसने इस आधार पर विश्वासियों को भलाई करने के लिए प्रेरित किया कि पुनरूत्थान में उन्हें इसका प्रतिफल मिलेगा। और यूहन्ना 11:24-26 में, लाजर की बहन, मार्था के साथ बातचीत में उसने इस धर्मशिक्षा की पुष्टि की। देखें लूका 20:37 में यीशु ने क्या कहा:

> मूसा ने भी झाड़ी की कथा में प्रकट किया है कि मरे हुए जी उठते हैं। (लूका 20:37)

यहाँ, यीशु ने बल दिया की सामान्य पुनरूत्थान की धर्मशिक्षा को पुराने नियम में पहले ही प्रकट कर दिया गया था। और इसी विचार की सम्पूर्ण नये नियम में पुष्टि की गई है। दुर्भाग्यवश, कलीसिया की कई शाखाओं में, मृतकों के दैहिक पुनरूत्थान को अनदेखा किया जाता है। बहुत से मसीही मानते हैं कि हम अनन्तकाल के लिए देहरहित आत्माओं के समान रहेंगे। परन्तु इब्रानियों 6:1 और 2 में, मृतकों के पुनरूत्थान को मसीही विश्वास की मूलभूत धर्मशिक्षाओं में से एक बताया गया है। और इब्रानियों 11:35 में, विश्वासियों के पुनरूत्थान को भले कामों को करने के लिए प्रेरक के रूप में बताया गया है। वास्तव में, प्रेरितों ने निरन्तर संकेत दिया कि मसीही पुराने नियम के पुनरूत्थान के वायदों पर विश्वास करते थे। उदाहरण के लिए, पतरस और यूहन्ना ने प्रेरितों के काम 4:1 और 2 में यह किया। और पौलुस ने प्रेरितों के काम 23:6-8 और 24:14-21 में यह किया। एक उदाहरण के लिए, देखें पौलुस ने प्रेरितों के काम 24:14 और 15 में किस प्रकार अपनी सेवकाई का बचाव किया:

> यह मैं तेरे सामने मान लेता हूँ, कि जिस पन्थ को वे कुपन्थ कहते हैं, उसी की रीति पर मैं अपने बापदादों के परमेश्वर की सेवा करता हूँ: और जो बातें व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों में लिखी हैं, उन सब की प्रतीति करता हूँ। और परमेश्वर से आशा रखता हूँ जो वे आप भी रखते हैं, कि धर्मी और अधर्मी दोनों का जी उठना होगा। (प्रेरितों के काम 24:14-15)

यहाँ, पौलुस ने संकेत दिया कि अन्तिम न्याय के समय सामान्य पुनरूत्थान की मसीही आशा ठीक उसी प्रकार है जैसी यहूदियों की थी। अन्तर यह था कि मसीही विश्वास करते थे कि इस पुनरूत्थान को मसीह द्वारा पूर्ण किया जाएगा।

हमारे लिए यह समझना महत्वपूर्ण है कि परमेश्वर की उद्धार की योजना सदा से एक समान रही है। उसने प्राचीन इस्राएल के उद्धार के लिए अलग तरीका, और हमारे उद्धार के लिए अलग तरीका नहीं ठहराया। उसने यहूदियों के लिए उद्धार का एक मार्ग, और अन्यजातियों के लिए दूसरा मार्ग नियुक्त नहीं किया। पुराना और नया नियम दोनों अपनी शिक्षाओं में संगठित हैं। और इसी कारण मसीही पुराने नियम को अपने जीवनों के लिए परमेश्वर का वचन मानते हैं। परमेश्वर के लोगों का हमेशा विश्वास के द्वारा अनुग्रह से मसीह में उद्धार हुआ है। मसीही करूणा और छुटकारे के उस दीर्घकालीन इतिहास का हिस्सा हैं जिन्हें परमेश्वर ने सदा अपने विश्वासयोग्य लोगों को उपलब्ध करवाया है। और सम्पूर्ण बाइबल-दोनों नियम-हमें इस अद्‌भुत सत्य के बारे में सिखाते हैं।

हमने देखा कि पुराने नियम और नये नियम, दोनों में, सुसमाचार में यह शुभ समाचार शामिल था कि मृतकों का पुनरूत्थान होगा, अब आइए हम विश्वासियों के पुनरूत्थान और यीशु के पुनरूत्थान के बीच संबंध पर एक नजर डालें।

यीशु का पुनरूत्थान

नया नियम सिखाता है कि यीशु के पुनरूत्थान और विश्वासियों के पुनरूत्थान के बीच कम से कम दो बहुत महत्वपूर्ण संबंध है। पहला, हम एक आशीषित जीवन के लिए जी उठेंगे विशेषत: इसलिए क्योंकि हम यीशु के साथ उसके पुनरूत्थान में एक हैं। जैसे पौलुस ने रोमियों 6:4 और 5 में लिखा:

> सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें। क्योंकि यदि हम उस की मृत्यु की समानता मे उसके साथ जुट गए हैं, तो निश्चय उसके जी उठने की समानता में भी जुट जाएंगे। (रोमियों 6:4-5)

पौलुस ने सिखाया कि विश्वास के द्वारा, बपतिस्मा हमें मसीह की मृत्यु में एक बनाता है, जिसके परिणामस्वरूप हमारे पाप के कारण आया हुआ कर्ज चुकाया जाता है। परन्तु यह हमें उसके पुनरूत्थान के साथ भी एक बनाता है, जिसका परिणाम है वर्तमान जीवन में हमारी आत्माओं की पुनर्उत्पत्ति, और भविष्य में हमारी देह का पुनरूत्थान। यीशु के पुनरूत्थान में हमारी एकता के बारे में 1 कुरिन्थियों 15:21 और 22, फिलिप्पियों 3:10-12, और कुलुस्सियों 2:12 जैसे स्थानों में भी सिखाया गया है।

इस तथ्य के परिणामस्वरूप कि हम यीशु के साथ उसके पुनरूत्थान में एक हैं, हमारा अपना पुनरूत्थान निश्चित है। देखें पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 15:20-23 में क्या लिखा है:

> परन्तु सचमुच मसीह मुर्दों में से जी उठा है, और जा सो गए हैं, उन में पहला फल हुआ। क्योंकि जब मनुष्य के द्वारा मृत्यु आई; तो मनुष्य ही के द्वारा मरे हुओं का पुनरूत्थान भी आया।... परन्तु हर एक अपनी अपनी बारी से; पहला फल मसीह; फिर मसीह के आने पर उसके लोग। (1 कुरिन्थियों 15:20-23)

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

यहाँ, पौलुस ने यीशु के पुनरूत्थान को कटनी के पहले फल कहा जिस में वे सब शामिल हैं जो उसके हैं।

पुराने नियम में, परमेश्वर इस्राएलियों से कहा कि वे कटनी के पहले फलों को उसके लिए बलिदान के रूप में चढ़ाएँ। इसे हम लैव्यवस्था 23:17 में देखते हैं। ये पहले फल सम्पूर्ण कटनी का केवल पहला हिस्सा होते थे, और वे सम्पूर्ण कटनी का प्रतिनिधित्व करते थे। वे एक प्रकार से गारण्टी थे-कटनी का पहला हिस्सा यहोवा को देने के द्वारा, इस्राएली अपने विश्वास को अभिव्यक्त करते थे कि शेष कटनी उन्हें प्राप्त होगी। यीशु का पुनरूत्थान हमें देने के द्वारा, परमेश्वर ने हमें उसी प्रकार जिला उठाने की अपनी पूर्ण इच्छा को प्रदर्षित किया। अत:, विश्वासियों के रूप में, हम यह जानते हुए अपने स्वयं के भावी पुनरूत्थान का भरोसा कर सकते हैं कि परमेश्वर ने मसीह के पुनरूत्थान के द्वारा उस दिन के लिए हम पर मोहर लगाई है।

अब तक देह के पुनरूत्थान के हमारे अध्ययन में, हमने हमारी देह में मृत्यु को लाने वाले शाप, और हमारी देह के लिए जीवन की पेशकश करने वाले सुसमाचार को देखा। अब, हम यह देखने के लिए तैयार हैं कि वास्तव में हमारी देह के छुटकारे का अनुभव कैसा होगा।

छुटकारा

हम हमारी देह के छुटकारे को तीन चरणों में देखेंगे: पहला, विश्वासियों द्वारा पृथ्वी पर वर्तमान जीवन में अनुभव की जाने वाली बातें। दूसरा, हमारी देह की मध्यम अवस्था जिसकी शुरूआत हमारी शारीरिक मृत्यु से होती है। और तीसरा, पुनरूत्थान का नया जीवन, जिसकी शुरूआत मसीह के पुन: आगमन पर होगी। आइए हम अपने वर्तमान जीवन से शुरू करें।

वर्तमान जीवन

यद्यपि मसीही हमारी देह के छुटकारे के बारे में अन्तिम दिन में हमारे पुनरूत्थान के अर्थ में बात करते हैं, परन्तु बाइबल वास्तव में सिखाती है कि हमारी देह का उद्धार पवित्र आत्मा के हमारे अन्दर वास करने के साथ ही शुरू हो जाता है जब हम पहली बार विश्वास में आते हैं। पवित्र आत्मा के इस वास का रोमियों 8:9-11 में वर्णन किया गया है। यद्यपि इससे तुरन्त हमारी देह का पुनरूत्थान नहीं होता है, परन्तु यह भविष्य में हमारी देह के पूर्ण छुटकारे की गारण्टी के साथ हम पर मोहर लगाता है, जैसा पौलुस ने इफिसियों 1:13 और 14 में सिखाया।

और हमारी देह पूरे जीवन भर निरन्तर पवित्र आत्मा के वास का लाभ उठाती रहती है, विशेषत: पवित्रीकरण की प्रक्रिया के द्वारा। हमारी देह का पवित्रीकरण हमारी आत्मा के पवित्रीकरण के समान ही है। पवित्र आत्मा हमें परमेश्वर के लिए अलग करता है और हमें शुद्ध करता है। वह निरन्तर हमारे जीवन भर हमें पवित्र करता रहता है, जब वह उन पापों को क्षमा करता है जिन्हें हम अपनी देह से करते हैं, और सुनिश्चित करता है कि हम अपनी देह का प्रयोग परमेश्वर के आदर के लिए करें। इसका परिणाम यह होता है कि हम अपनी देह से परमेश्वर का आदर करते हैं, जैसा पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 6:20 में सिखाया, और हम अपने शरीरों को जीवित बलिदान के रूप में परमेश्वर को चढ़ाते हैं, जैसा हम रोमियों 12:1 में पढ़ते हैं।

मध्यम अवस्था

विश्वासियों के वर्तमान जीवन में हमारे शरीरों के छुटकारे की शुरूआत के बाद, यह प्रक्रिया हमारी शारीरिक मृत्यु के दौरान जारी रहती है।

जब हम मरते हैं, तो हमारा शरीर कुछ समय के लिए हमारी आत्मा से अलग हो जाता है। इस अवस्था को अक्सर मध्यम अवस्था कहा जाता है-पृथ्वी पर अब हमारे जीवन, और पुनरूत्थान में हमारे

जीवन के बीच की अवस्था। मध्यम अवस्था के दौरान, हमारी आत्मा मसीह के साथ स्वर्ग में वास करती है। पवित्र-वचन इसके बारे में मत्ती 17:3 और 2 कुरिन्थियों 5:6-8 जैसे स्थानों में बताता है।

हमारी आत्मा स्वर्ग में होती है, जबकि शरीर पृथ्वी पर रहता है। हमारे शरीर अब भी पाप के कारण दूषित हैं, जैसा इस तथ्य से साबित होता है कि वह सड़ जाता है। परन्तु वह पाप जो उन्हें दूषित करता है अब उन पर पाप करने के लिए प्रभाव नहीं डाल सकता है। एक, मृत्यु हमें पाप की अधीनता से मुक्त करती है, जैसा पौलुस ने रोमियों 6:2-11 में सिखाया। दूसरा, हमारे शरीर अच्छे या बुरे किसी भी विचार, कार्य या भावना में अक्षम होकर, कब्र में अचेत अवस्था में पड़े रहते हैं।

यद्यपि हमारे शरीर और आत्मा मृत्यु के समय अल्पकाल के लिए अलग होते हैं, परन्तु बाइबल कभी भी यह नहीं कहती है कि फिर हमारे शरीर हमारा हिस्सा नहीं रहते हैं। चाहे उन्हें दफनाया जाए, या उनका दाह-संस्कार किया जाए, या खो जाएँ, हमारे शरीर निरन्तर हमारा हिस्सा बने रहते हैं। बाइबल में इसके दर्जनों उदाहरण हैं। उदाहरण के लिए, 1 शमूएल 25:1 कहता है कि शमूएल को उसके घर में रामा में मिट्टी दी गई। 1 राजा 2:10 कहता है कि दाऊद को दाऊद के नगर, यरूशलेम में मिट्टी दी गई। और पूरे 1 और 2 राजा में और 2 इतिहास में, बार-बार यही कहा गया है कि यहूदा के राजाओं को उनके पुरखे दाऊद के नगर में मिट्टी दी गई। उनके शरीर अब भी उन्हीं के हैं, और वे अब भी उनके व्यक्तित्व का हिस्सा हैं।

वेस्टमिन्स्टर लघु प्रश्नोत्तरी प्रश्न और उत्तर संख्या 37 में हमारे विश्वास का वर्णन इस प्रकार करती है। इस प्रश्न के उत्तर में:

> मृत्यु के समय विश्वासियों को मसीह से क्या लाभ प्राप्त होते हैं?

प्रश्नोत्तरी का उत्तर है:

> विश्वासियों की आत्माएँ मृत्यु के समय पवित्रता में सिद्ध हो जाती हैं, और तुरन्त महिमा में प्रवेश कर जाती हैं; और उनके शरीर, जो अब भी मसीह में एक हैं, पुनरूत्थान तक, अपनी कब्रों में विश्राम करते हैं।

यहाँ, प्रश्नोत्तरी कहती है कि मृत्यु के समय विश्वासियों की दो नियति है-एक उनकी आत्माओं के लिए, और एक उनके शरीरों के लिए। हमारी आत्मा स्वर्ग में महिमा में प्रवेश कर जाती है, परन्तु हमारे शरीर, जो अब भी मसीह में एक हैं, अपनी कब्रों में विश्राम करते हैं - वे पुनरूत्थान में नये जीवन के इन्तजार में निष्क्रिय रहते हैं।

> मैं सोचता हूँ यह कहना सच है कि जब हमारी आत्माएँ स्वर्ग में हैं और हमारे शरीर कब्र में हैं, हाँ, हम एक ही समय दो स्थानों पर हैं। इसके लिए कुछ विवरण की आवश्यकता है, और लघु प्रश्नोत्तरी का एक उत्तर इस बिन्दू पर बहुत अच्छा है। "विश्वासियों की आत्माएँ मृत्यु के समय पवित्रता में सिद्ध हो जाती हैं, और तुरन्त महिमा में प्रवेश कर जाती हैं; और उनके शरीर, जो अब भी मसीह में एक हैं, पुनरूत्थान तक, अपनी कब्रों में विश्राम करते हैं।" आत्मा का शरीर से अलग होने का उसका पहला भाग 2 कुरिन्थियों 5:1-10 का विषय है। पौलुस अपने वर्तमान मरणहार शरीर को पृथ्वी पर का तम्बू कहता है, और वह मृत्यु की दशा में रूचि नहीं रखता है क्योंकि उसकी आत्मा तब उसके शरीर से अलग हो जाएगी, जो कि एक अप्राकृतिक अवस्था है।
>
> डॉ. नॉक्स चैम्बलिन

एक ही समय में दो स्थानों पर होने का यह खिंचाव स्वर्ग में भी महसूस किया जाता है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि स्वर्ग हमारी अपेक्षाओं से परे अद्‌भुत होगा। परन्तु यह भी सत्य है कि स्वर्ग में भी हमारा उद्धार पूर्ण नहीं होगा क्योंकि हमारे शरीरों का उस समय तक पुनरूत्थान नहीं हुआ होगा। देखें पौलुस ने रोमियों 8:23 में किस प्रकार देह के पुनरूत्थान के बारे में बात की:

> और हम भी जिन के पास आत्मा का पहिला फल है, आप ही अपने में कराहते हैं; और अपने लेपालक होने की, अर्थात् अपनी देह के छुटकारे की बाट जोहते हैं। (रोमियों 8:23)

यहाँ, पौलुस ने कहा कि हम इस जीवन में कराहते हैं क्योंकि हमारे पास पुनरूत्थान प्राप्त शरीर नहीं हैं। परन्तु स्वर्ग में आत्माएँ अब भी अपने नये शरीरों का इन्तजार कर रही हैं। अत:, यह सोचना सही है कि एक अर्थ में वे भी कराह रहे हैं, क्योंकि वे अपने शरीरों के पुनरूत्थान का इन्तजार कर रहे हैं।

> कुछ लोग सोचते हैं कि हमें मिलने वाले शरीर सुविधाजनक पृथ्वी के कपड़े, वैकल्पिक उपकरण हैं, कि शरीर से अलग होने में हम पूर्णत: सन्तुष्ट और खुश हैं। यह बाइबल की बजाय प्लूटोवादी ज्यादा प्रतीत होता है। अत:, अपनी व्यक्तिगत मृत्यु और वायदा किए हुए मृतकों के पुनरूत्थान के बीच की इस अवस्था में रहना कैसा है? यह कैसा है? हमें इसका चित्रात्मक विवरण नहीं दिया गया है। हमें इसका विस्तृत विवरण नहीं दिया गया है। परन्तु पवित्र-वचन से हमें दिया गया उत्तर बहुत ही निश्चिन्त करने वाला और संबंधात्मक है। हम प्रभु के साथ रहेंगे।
>
> डॉ. ग्लेन स्कोर्जी

हमारे वर्तमान जीवन और शारीरिक मृत्यु को ध्यान में रखते हुए, हम यह देखने के लिए तैयार हैं कि नये जीवन में हमारे शरीरों का छुटकारा कैसे पूरा होता है।

नया जीवन

सामान्य पुनरूत्थान में हमारे शरीरों को पुन: जीवन प्राप्त होने पर एक नया, सिद्ध जीवन प्राप्त होगा। पुनरूत्थान में, पाप के परिणामों को अन्तिम रूप से और हमेशा के लिए पूरी तरह हम से अलग कर दिया जाएगा। इसके बारे में हम रोमियों 8:23, 1 कुरिन्थियों 15:12-57, और फिलिप्पियों 3:11 में पढ़ते हैं। धर्मविज्ञानी उद्धार की अवस्था को अक्सर महिमान्वित किया जाना कहते हैं, क्योंकि हमे महिमामय, सिद्ध मनुष्य बनाया जाता है। पवित्र-वचन हमारे महिमा पाने के बारे में ज्यादा विस्तार से नहीं बताता है। परन्तु पौलुस ने 1 कुरिन्थियों अध्याय 15 में संक्षेप में हमारी महिमामय देहों की तुलना हमारे वर्तमान शरीरों से की। देखें पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 15:42-44 में क्या लिखा है:

> शरीर नाशवान दशा में बोया जाता है, और अविनाशी रूप में जी उठता है। वह अनादर के साथ बोया जाता है, और तेज के साथ जी उठता है; निर्बलता के साथ बोया जाता है, और सामर्थ के साथ जी उठता है। स्वाभाविक देह बोई जाती है, और आत्मिक देह जी उठती है। (1 कुरिन्थियों 15:42-44)

हम पूरी तरह से निश्चित तौर पर यह नहीं कह सकते हैं कि हमारे अब के शरीरों में और पुनरूत्थान के समय के शरीरों में क्या-क्या समानताएँ तथा भिन्नताएँ होंगी। जिस प्रकार पुनरूत्थान के बाद यीशु की देह में बदलाव आया, उसी प्रकार हमारे शरीर भी बदल जाएंगे। वे नवीनीकृत और सिद्ध होंगे। वे अनश्वर,

महिमामय, सामर्थी और आत्मिक होंगे। परन्तु वे पूरी तरह मानवीय भी होंगे। हमारे पुनरूत्थान में, हम अन्ततः ऐसे लोग बन जायेंगे जिसकी परमेश्वर ने सदा से हमारे लिए योजना बनाई है।

पाप के परिणामस्वरूप हमारी देह मरती है; शारीरिक मृत्यु मनुष्यों के पाप की दुष्टता में गिरने के विरूद्ध परमेश्वर का दण्ड है। परन्तु शुभ समाचार यह है कि सुसमाचार हमारे शरीरों की वापसी की घोषणा करता है। यह हमें बताता है कि यीशु हमें सम्पूर्ण व्यक्ति के रूप में, देह और आत्मा को छुड़ाने के लिए आया। और यह छुटकारा महिमामय है। यह बड़े आनन्द और उत्सव का कारण है। हमारे शरीरों के पुनरूत्थान के साथ, हम अन्ततः मृत्यु पर जय की घोषणा करने में सक्षम हो जायेंगे। और हम अन्ततः उन सारी आशीषों को पाने के लिए तैयार हो जायेंगे जो परमेश्वर ने नये आकाश और नई पृथ्वी में हमारे लिए रखी हैं। और हम अन्ततः अपनी स्वयं की आँखों से यीशु की विजय को देख पायेंगे।

अब तक उद्धार की हमारी चर्चा में, हमने प्रेरितों के विश्वास-कथन में पापों की क्षमा और देह के पुनरूत्थान से संबंधित विश्वास के सूत्रों के बारे में बात की। अब, हम अपने अन्तिम विषयः अनन्त जीवन पर आने के लिए तैयार हैं।

अनन्त जीवन

प्रेरितों का विश्वास-कथन अपने विश्वास के अन्तिम सूत्र में अनन्त जीवन का वर्णन करता हैः

> मैं... अनन्त जीवन में विश्वास करता हूँ।

इस बिन्दू पर, विश्वास-कथन सदा के जीवन को ध्यान में रखता है, जिसे अक्सर अनन्त जीवन कहा जाता है, जो हमारे शरीरों के पुनरूत्थान के बाद आता है। विश्वास-कथन इस विश्वास की पुष्टि करता है कि अन्त में परमेश्वर के सभी विश्वासयोग्य लोगों को सिद्ध, आशीषित, भ्रष्टता से मुक्त, कभी समाप्त न होने वाले जीवन का प्रतिफल मिलेगा।

यद्यपि बहुत सी बातें हैं जो हम अनन्त जीवन के बारे में कह सकते हैं, लेकिन इस अध्याय में हम तीन मुद्दों पर ध्यान देंगेः पहला, हम अनन्त जीवन की समयावधि का वर्णन करेंगे। यह कब शुरू होता है? दूसरा, हम अनन्त जीवन की गुणवत्ता के बारे में बात करेंगे। यह किस प्रकार दूसरे प्रकार के जीवन से अलग है? और तीसरा, हम उस स्थान का वर्णन करेंगे जहाँ हम सदा के लिए रहेंगे। आइए हम अनन्त जीवन की समयावधि से शुरूआत करें।

समयावधि

> अनन्त जीवन कब शुरू होता है? मसीह ने कहा कि वह इसलिए आया है कि हमें जीवन मिले और बहुतायत का जीवन मिले। निश्चित रूप से वह कह रहा है कि मसीह में होना, मसीह का चेला बनना, हमें गुणात्मक रूप से जीवन की एक उत्तम रीति से अवगत कराता है, परन्तु क्या वह अनन्त जीवन है? क्या अनन्त जीवन तब शुरू होता है जब हम इस नश्वर अस्तित्व के क्षेत्र से बाहर के जीवन में प्रवेश करते हैं? क्या अनन्त जीवन तब शुरू होता है? एक अर्थ में, हाँ। परन्तु दूसरे अर्थ में, एक नया जीवन है, मसीह का पुनरूत्थान प्राप्त जीवन जो कब्र से अनन्तता में ले जाएगा, परमेश्वर के साथ कभी न समाप्त होने वाला अनन्तकाल, वह जीवन है जिसे अब हमारे अन्दर एक बीज के रूप में बोया गया है। इसलिए कभी न समाप्त

> होने वाला जीवन अब शुरू हो रहा है, और यह समझना महत्वपूर्ण है कि यह अनन्त जीवन केवल अनन्त अवधि द्वारा परिभाषित जीवन नहीं है, बल्कि गुणात्मक रूप से परिभाषित जीवन जो अब मसीह-केन्द्रित और परमेश्वर-केन्द्रित है और उस पूर्ण पुन: स्थापना की ओर बढ़ रहा है जो मनुष्यों के लिए अपेक्षित था। और हम उस में अब भागी होते हैं, उस समय भी जब हम एक दर्दनाक, संघर्षपूर्ण, टूटे हुए संसार में हैं।
>
> डॉ. ग्लेन स्कोर्जी

पवित्र-वचन अक्सर कहता है कि विश्वासियों में अनन्त जीवन वर्तमान यथार्थ के रूप में पहले से ही है। इसे हम यूहन्ना 10:28, 1 तिमुथियुस 6:12, 1 यूहन्ना 5:11-13, और बहुत से अन्य स्थानों पर देखते हैं। इसके एक उदाहरण के रूप में, देखें यीशु ने यूहन्ना 5:24 में क्या कहा है:

> मैं तुम से सच सच कहता हूँ, जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजनेवाले की प्रतीति करता है, अनन्त जीवन उसका है, और उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती परन्तु वह मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है। (यूहन्ना 5:24)

यीशु और नये नियम के लेखकों ने कई बार अनन्त जीवन को वर्तमान यथार्थ के रूप में बताया जो मसीह के साथ हमारी एकता का परिणाम है। और निस्सन्देह यह सत्य है। हमारे शरीर मर जायेंगे लेकिन हमारी आत्मा कभी नहीं मरेगी। हमारे अन्दर अब जो आत्मिक जीवन है वही सदा के लिए हम में होगा।

दूसरी तरफ, पवित्र-वचन इससे भी अधिक बार इस तथ्य को बताता है कि हमें अनन्त जीवन हमारे उत्तराधिकार के रूप में अन्तिम न्याय के समय दिया जाएगा। इसे हम मत्ती 25:46, मरकुस 10:29-30, यूहन्ना 12:25, रोमियों 2:5-7, और यहूदा पद 21 में देखते हैं। एक उदाहरण के रूप में, देखें यूहन्ना ने अपने सुसमाचार के अध्याय 6 पद 40 में क्या लिखा है:

> क्योंकि मेरे पिता की इच्छा यह है, कि जो कोई पुत्र को देखे, और उस पर विश्वास करे, वह अनन्त जीवन पाए; और मैं उसे अन्तिम दिन फिर जिला उठाऊंगा। (यूहन्ना 6:40)

जैसा यूहन्ना ने यहाँ बताया, पवित्र-वचन भी अक्सर अनन्त जीवन की पूर्ण प्राप्ति को हमारे शरीरों के पुनरूत्थान से जोड़ता है। जब हमारे शरीरों को जिन्दा किया जाता है, तो शरीर और आत्मा में पूरी तरह छुटकारा पाए और पुन: स्थापित मनुष्यों के रूप में सदा तक जीवित रहेंगे।

> मैं सोचता हूँ कि यह कहना सहायक है कि मसीह के साथ हमारी एकता के द्वारा, मसीह में हम जो प्राप्त करते हैं, वह “पहले ही” और “अभी नहीं” दोनों है। और इससे मेरा मतलब है कि मसीह के लाभ, जिन में अनन्त जीवन शामिल है, वे “पहले ही” हमारे हैं जब हम मसीह को ग्रहण करते हैं, जब हम मसीह पर विश्वास करते हैं। वे हमारे हैं-हमारे पास अनन्त जीवन है। लेकिन साथ ही, यह “अभी नहीं” है, इस अर्थ में, कि निस्सन्देह मसीह को ग्रहण करने के बाद भी हम में से बहुत से लोग बूढ़े होंगे, बहुत से बीमार होंगे, और यदि मसीह पहले नहीं आता है तो हम में से बहुत से लोग मृत्यु का स्वाद चखेंगे। और उस अर्थ में, अनन्त जीवन का “अभी नहीं” अब भी हमारे इन्तजार में है। अत: मैं सोचता हूँ कि “पहले ही” - “अभी नहीं” सोचने में हमारी मदद करते हैं, हाँ, हम में अनन्त जीवन है, परन्तु साथ ही, नये आकाश और नई पृथ्वी में अनन्त जीवन हमारे इन्तजार में है।

डॉ. जेफ्री जू

एक अर्थ में यह कहना उचित है कि हमारी आत्माओं के लिए अनन्त जीवन तब शुरू होता है जब हम नया जन्म लेते हैं। परन्तु हम तब तक पूरी तरह जीवित नहीं होंगे जब तक कि अन्तिम न्याय के समय हमारे शरीरों को जिन्दा न किया जाए। केवल उस समय ही हमारा सम्पूर्ण अस्तित्व परमेश्वर के सामने जीवित रहेगा। उस से पहले, हमारी आत्माओं के छुटकारे के द्वारा हम अनन्त जीवन का केवल स्वाद चखते हैं। परन्तु हमारे शरीरों को भी नया जीवन मिलने के बाद ही हम वास्तव में परमेश्वर की इच्छानुरूप जीयेंगे।

अनन्त जीवन की समयावधि की इस समझ को ध्यान में रखते हुए, आइए हम इसकी गुणवत्ता को देखें।

गुणवत्ता

बाइबल में, अनन्त जीवन का अर्थ केवल यह नहीं है कि हमारा अस्तित्व और विवके सदा तक रहेगा। आखिर, उन लोगों का अस्तित्व और विवेक भी सदा तक रहेगा जो परमेश्वर के दण्ड के अधीन हैं। इसके बजाय, अनन्त जीवन का मुख्य गुण है कि हम सदा के लिए परमेश्वर की आशीषों में रहेंगे। इस अर्थ में, जीवन होने का अर्थ है परमेश्वर की प्रसन्नता और आशीष को पाना। और इसके विपरीत, मृत्यु का अर्थ है परमेश्वर के क्रोध और शाप को सहना। अनन्त जीवन और अनन्त मृत्यु दोनों में निरन्तर अस्तित्व शामिल है। उन में अन्तर उस अस्तित्व की गुणवत्ता है। जैसे यीशु ने यूहन्ना 17:3 में प्रार्थना की:

> और अनन्त जीवन यह है, कि वे तुझ अद्वैत सच्चे परमेश्वर को और यीशु मसीह को, जिसे तू ने भेजा है, जानें। (यूहन्ना 17:3)

यहाँ, यीशु ने सिखाया कि अनन्त जीवन परमेश्व और यीशु को जानने के बराबर है। इस सन्दर्भ में, जानने के विचार का निहितार्थ है एक प्रेममय संबंध। यीशु का कहना था कि अनन्त जीवन को केवल अस्तित्व या विवेक के अर्थ में परिभाषित नहीं किया जाता है, बल्कि परमेश्वर के प्रेम के अनुभव के अर्थ में।

या देखें कि पौलुस ने रोमियों 7:9-11 में जीवन और मृत्यु के बारे में किस प्रकार कहा, वहाँ उसने लिखा:

> मैं तो व्यवस्था बिना पहले जीवित था, परन्तु जब आज्ञा आई, तो पाप जी गया, और मैं मर गया। और वही आज्ञा जो जीवन के लिए थी, मेरे लिए मृत्यु का कारण ठहरी। क्योंकि पाप ने अवसर पाकर आज्ञा के द्वारा मुझे बहकाया, और उसी के द्वारा मुझे मार भी डाला। (रोमियों 7:9-11)

पौलुस द्वारा यहाँ वर्णित सम्पूर्ण अवधि में, वह शारीरिक और मानसिक रूप से जीवित था। वह एक चेतन, तार्किक अस्तित्व के रूप में जीवित रहा। फिर भी, उसने दावा किया कि पहले वह जीवित था, और फिर मर गया, मार दिया गया। और अन्तर परमेश्वर के सामने उसका आधार था। व्यवस्था द्वारा दोषी ठहराने से पहले वह जीवित था। परन्तु जब व्यवस्था ने उसे परमेश्वर के शाप के अधीन किया, पौलुस मर गया। बाद में, जब हम मसीह में आया, शाप हटा दिया गया, और उसमें नया जीवन आया। इसी विचार को हम यूहन्ना 5:24, और 1 यूहन्ना 3:14 में देखते हैं।

इसके बारे में इस प्रकार सोचें: अन्तिम दिन, सामान्य पुनरूत्थान में सारे मृतक जी उठेंगे। हमारी अनश्वर आत्माएँ पुन: हमारे पुनरूत्थान प्राप्त शरीरों से जुड़ जाएंगी। यूहन्ना 5:28 और 29 के अनुसार, भले

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

काम करने वाले प्रतिफल पाने के लिए जी उठेंगे, और बुराई करने वाले दण्ड पाने के लिए जी उठेंगे। दोनों अपने पुनरूत्थान प्राप्त शरीरों में सदा के लिए चेतन जीवन बितायेंगे। परन्तु बाइबल धर्मियों की नियति को- जीवन, और दुष्टों की नियति को- मृत्यु कहती है। अन्तर यह नहीं है कि वे रहेंगे, या सोचेंगे या अहसाह करेंगे या नहीं। अन्तर है परमेश्वर के साथ उनका संबंध। यदि हम परमेश्वर की आशीष के अधीन हैं, तो बाइबल कहती है हम जीवित हैं। यदि हम उसके शाप के अधीन हैं, तो यह कहती है हम मृत हैं। अत:, अनन्त जीवन परमेश्वर के साथ एक आशीषित संबंध में निरन्तर चेतन अस्तित्व है। परन्तु ये आशीषें क्या हैं? आशीषित जीवन कैसा होता है?

> मेरा सोचना है हमें परमेश्वर के साथ अपने जीवन को केवल बादलों पर तैरने के समान नहीं देखना चाहिए। परन्तु हमारे पास नये पुनरूत्थान प्राप्त शरीर होंगे; शरीर जिन्हें पाप और रोग और मृत्यु ने स्पर्श नहीं किया है। हम अनश्वर होंगे; हम कभी नहीं मरेंगे। और हम एक नई पृथ्वी पर रहेंगे। अब, इसके विवरण हमारे पास नहीं हैं-उस में क्या शामिल होगा? हम सारे विवरणों को नहीं जानते हैं, परन्तु हम जानते हैं कि हमारे कुछ उत्तरदायित्व होंगे। हम मसीह के साथ राज्य करेंगे। और मेरा मानना है, यह परमेश्वर द्वारा रचित नया ब्रह्माण्ड है जिस में हम सृष्टि के सम्पर्क में रहेंगे। और मैं सोचता हूँ, वहाँ हमारे करने के लिए विशेष कार्य होंगे। परन्तु मूलत:, नया नियम इस बात पर बल नहीं देता है कि हम क्या करेंगे, और मुझे निश्चय है कि यह अद्‌भुत होगा। परन्तु नया नियम इस बात पर बल देता है कि परमेश्वर हमारे साथ होगा। हम उसके मुँह को देखेंगे। उसके साथ संगति करना हमारे पूर्ण-सन्तुष्टिप्रद आनन्द होगा।
>
> डॉ. टॉम श्रेनर

प्रसिद्ध धर्मविज्ञानी लुइस बेरखोफ, जो 1873 से 1957 के बीच रहे, ने अपनी पुस्तक, विधिवत् धर्मविज्ञान के भाग 6, अध्याय 5 में अनन्त जीवन की अन्तिम अवस्था का वर्णन किया। देखें उन्होंने क्या लिखा है:

> परमेश्वर के साथ संगति में जीवन की पूर्णता का आनन्द लिया जाता है ... वे यीशु मसीह में परमेश्वर को आमने-सामने देखेंगे, उस में पूर्ण सन्तुष्टि पायेंगे, उस में आनन्द मनायेंगे, और उसकी महिमा करेंगे... पहचान और सामाजिक सम्पर्क उच्च स्तरीय होगा... प्रत्येक व्यक्ति का आनन्द सिद्ध और पूर्ण होगा।

यह अजीब प्रतीत हो सकता है कि बाइबल अनन्त जीवन की प्रकृति के बारे में ज्यादा नहीं बताती है। आखिर, अनन्त जीवन सुसमाचार द्वारा उन लोगों को दिया जाने वाला महान प्रतिफल है जो मन फिराते हैं और मसीह पर विश्वास करते हैं। परन्तु वास्तविकता यह है कि पवित्र-वचन अनन्त जीवन के बारे में सामान्य अर्थों में बात करता है। प्रकाशितवाक्य 21:3 और 4 हमें बताते हैं कि परमेश्वर अपने लोगों के संग वास करेगा, और वहाँ मृत्यु या दुःख नहीं होगा। हम नया शरीर प्राप्त करेंगे, और हम पाप की उपस्थिति, भ्रष्टता और प्रभाव से बिल्कुल मुक्त होंगे। परन्तु विवरण? सच्चाई यह है कि बाइबल उनके बारे में बहुत कम बताती है। इसके बजाय, यह अधिकाँशत: हमें यह भरोसा करने की प्रेरणा देती है कि परमेश्वर भला है, और हम उन आश्चर्यों के बारे में अत्यधिक अनुमान न लगाएँ जो उसने हमारे लिए रखे हैं। देखें पौलुस 2 कुरिन्थियों 12:2-4 में क्या लिखता है:

> मैं मसीह में एक मनुष्य को जानता हूँ जो ... तीसरे स्वर्ग तक उठा लिया गया ...स्वर्गलोक पर उठा लिया गया। और ऐसी बातें सुनीं जो कहने की नहीं; और जिन का मुँह पर लाना मनुष्य को उचित नहीं। (2 कुरिन्थियों 12:2-4)

देखें पौलुस ने इस अनुभव के बारे में क्या कहा। सुनी गई बातें कहने की नहीं थीं-उन्हें मानवीय भाषा में पर्याप्त रूप से अभिव्यक्त नहीं किया जा सकता। इससे बढ़कर, मनुष्य को यह बताने की अनुमति नहीं है कि तीसरे स्वर्ग में क्या है। यह अद्‌भुत है कि परमेश्वर ने अब इसे रहस्य रखा है।

और यह केवल स्वर्ग था - हमारे पुनरूत्थान से पहले की मध्यम अवस्था। यदि स्वर्ग के रहस्यों को प्रकट नहीं किया जा सकता, तो हमारी अन्तिम अवस्था के रहस्य कितने अधिक होंगे? कौन कल्पना कर सकता है कि मसीह के दुबारा आगमन पर जीवन कितना अद्‌भुत होगा? बाइबल हमें बताती है कि फिर कोई दुःख, कष्ट, निराशा, या मृत्यु नहीं होगी। ये बातें अद्‌भुत और सत्य हैं, परन्तु हमें उनके बारे में सारे विवरण नहीं बताती है।

अब अनन्त जीवन की समयावधि और गुणवत्ता को देखने के बाद, आइए हम अपने अन्तिम शीर्षक पर आते हैं: वह स्थान जहाँ हम सदा के लिए रहेंगे।

स्थान

पवित्र-वचन अक्सर उस स्थान को नया आकाश और नई पृथ्वी कहता है जहाँ हम अनन्तकाल तक रहेंगे। इस भाषा को हम यशायाह 65:17 और 66:22, 2 पतरस 3:13, और प्रकाशितवाक्य 21:1 में पाते हैं। आकाश और पृथ्वी की यह पुन: सृष्टि बाइबल की कहानी को पूर्णता पर लाती है। इतिहास उत्पत्ति अध्याय 1 पद 1 से शुरू हुआ जब परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की। परन्तु फिर यह मनुष्य के पाप में गिरने के कारण भ्रष्ट हो गई, और परमेश्वर के वास के लिए अनुपयुक्त हो गई। शेष बाइबल हमें इस कहानी को बताती है कि मनुष्य और सृष्टि दोनों का उद्धार कैसे किया जा रहा है। और जब यीशु वापस आएगा, तो अन्तिम परिणाम यह होगा कि आकाश और पृथ्वी को छुटकारा देकर नवीन किया जाएगा, ताकि अन्ततः परमेश्वर अपने पुनरूत्थान प्राप्त लोगों के साथ पृथ्वी पर वास कर सके। मत्ती 6:9 और 10 में यीशु के मन में यही लक्ष्य था, जब उसने हमें इन शब्दों में प्रार्थना करना सिखाया:

> हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है; तेरा नाम पवित्र माना जाए। तेरा राज्य आए; तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो। (मत्ती 6:9-10)

लक्ष्य सदा यही था कि परमेश्वर का राज्य पूरी तरह से स्वर्ग में, जहाँ स्वर्गदूत और मृत संतों की आत्माएँ रहती है, और पृथ्वी, जहाँ हम रहते हैं, दोनों में प्रकट हो। इसीलिए यीशु ने हमें सिखाया कि हम परमेश्वर से उसके राज्य को पृथ्वी पर लाने के लिए प्रार्थना करें, और उसकी इच्छा को पृथ्वी पर वैसे ही पूरी होने दें जैसी स्वर्ग में होती है।

यद्यपि पवित्र-वचन अक्सर इस नई सृष्टि के बारे में नहीं बताता है, परन्तु जब बताता है तो यह स्पष्ट करता है कि छुटकारा पाए हुए मनुष्यों का अन्तिम स्थान स्वर्ग में नहीं, बल्कि नवीनीकृत पृथ्वी पर होगा। उदाहरण के लिए, यशायाह 65:17-19 में, हम पढ़ते हैं कि परमेश्वर के लोग पवित्र नगर नये यरूशलेम में वास करेंगे। और प्रकाशितवाक्य 21:2 में, हम पाते हैं कि यह नया यरूशलेम नई पृथ्वी पर स्थित होगा। देखें यूहन्ना ने प्रकाशितवाक्य 21:1-5 में क्या लिखा:

> फिर मैं ने नये आकाश और नयी पृथ्वी को देखा... मैं ने पवित्र नगर नये यरूशलेम को स्वर्ग पर से परमेश्वर के पास से उतरते देखा... फिर मैं ने सिंहासन में से किसी को ऊँचे शब्द से यह कहते हुए सुना, कि देख, परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच में

> है; वह उन के साथ डेरा करेगा, और वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर आप उनके साथ रहेगा; और उनका परमेश्वर होगा। ... और जो सिंहासन पर बैठा था, उस ने कहा, कि देख, मैं सब कुछ नया कर देता हूँ ! (प्रकाशितवाक्य 21:1-5)

यहाँ देखते हैं कि परमेश्वर स्वर्ग में नये यरूशलेम को तैयार कर रहा है। और जब नई पृथ्वी तैयार हो जाए, तब वह नये यरूशलेम को अपने लोगों के बीच, जो उसके साथ नई पृथ्वी पर वास करेंगे, अपने पवित्र वासस्थान के रूप में स्वर्ग से उतारेगा। यदि परमेश्वर की योजना हमें अनन्तकाल के लिए स्वर्ग में ले जाने की होती, तो नई पृथ्वी की कोई आवश्यकता नहीं थी। परन्तु जैसा हम यहाँ पढ़ते हैं, परमेश्वर सब कुछ नया कर रहा है, संसार को भी कि वह हमारा अनन्त घर बने।

आरम्भिक कलीसियाई पिता अगस्टीन, हिप्पो के प्रसिद्ध बिशप जो 354 से 430 ईस्वी में रहे, ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक परमेश्वर का नगर की किताब 20, पाठ 16 में नई पृथ्वी के बारे में इस प्रकार लिखा:

> जिस प्रकार संसार को भी बेहतरी के लिए नया किया गया है, तो यह मनुष्यों के लिए उचित है कि वे भी कुछ बेहतरी के लिए अपने शरीर में नये हो जाएँ।

> एक दिन आ रहा है जब परमेश्वर सब कुछ नया करेगा। इसे हम विशेषत: उन खूबसूरत शब्दों में देख सकते हैं जो यीशु ने हमें, अपने चेलों को प्रार्थना करने के लिए सिखाए जब उसने कहा, "हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है, तेरा नाम पवित्र माना जाए, तेरा राज्य आए, और तेरी इच्छा पृथ्वी पर वैसे ही पूरी हो जैस स्वर्ग में होती है।" वह निर्णायक, केन्द्रिय, मूलभूत मसीही विचार है कि अब हम स्वर्गीय वास्तविकताओं के पृथ्वी की वास्तविकता बनने के इन्तजार के समय में जी रहे हैं-जिस प्रकार सब कुछ स्वर्ग में किया जाता है जब परमेश्वर की महिमा की जाती है, और सब कुछ ठीक होता है, और धार्मिकता, और महिमा, और सच्चाई, और प्रेम राज्य करते हैं। मसीहियों के रूप में हमारी आशा, निश्चित आशा, है कि ये स्वर्ग की वास्तविकताएँ पृथ्वी की वास्तविकताएँ बन जायेंगी, और पवित्र-वचन का भी यही वायदा है कि नई सृष्टि हमारा अनन्त घर है।
>
> डॉ. जोनाथन पेनिंगटन

यदि हमारी नजर इस तथ्य से हट जाए कि नई पृथ्वी हमारा घर होगी, तो हमारे लिए अपने आपको वास्तविकता के भौतिक पहलुओं से अलग करना, और यह सोचना आसान हो सकता है कि पृथ्वी का दैहिक अस्तित्व आशीष के बजाय एक कष्ट है। परन्तु जब हम यह पहचान लेते हैं कि पृथ्वी ही हमारा स्थायी घर होगी, तो हम इस वर्तमान संसार को एक आशीष और उस खूबसूरती और आशीष के स्वाद के रूप में देख सकते हैं जो परमेश्वर ने हमारे लिए आने वाले संसार में रखी है।

उपसंहार

प्रेरितों के विश्वास-कथन पर इस अध्याय में, हमने उद्धार के विषय पर ध्यान दिया। हमने पाप की समस्या, दिव्य अनुग्रह के उपहार, और मानवीय उत्तरदायित्व के अर्थ में पाप की क्षमा के बारे में बात की। हमने मृत्यु के शाप, जीवन के सुसमाचार, और मसीह में छुटकारे को देखने के द्वारा देह के

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

पुनरूत्थान की धर्मशिक्षा का अनुसंधान किया। और हमने अनन्त जीवन की समयावधि, गुणवत्ता और स्थान सहित उसकी प्रकृति देखा।

उद्धार पर इस अध्याय में, हमने देखा कि प्रेरितों का विश्वास-कथन हमारे सामान्य मसीही अंगीकार के आवश्यक तत्वों पर ध्यान केन्द्रित करता है जिसे कलीसिया ने सदियों ने बनाए रखा है। यदि दूसरी परम्पराओं और संस्थाओं के मसीहियों से बात करते समय हम इन सामान्य धर्मशिक्षाओं को ध्यान में रखते हैं, तो हम पायेंगे कि हमारे पास प्रेरितों के विश्वास-कथन की पुष्टि करने वाले लोगों के साथ एकता स्थापित करने का, और नहीं करने वालों को सुधारने का ठोस आधार है। इससे बढ़कर, जब हम उद्धार की इन आवश्यक धर्मशिक्षाओं पर ध्यान केन्द्रित करते हैं, तो यह हमें उस बड़ी तस्वीर को देखने में सहायता करेगा जो परमेश्वर इस संसार में कर रहा है, और उसके प्रेम और अनुग्रह के लिए उसकी स्तुति करने के ज्यादा से ज्यादा कारणों को खोजने में सहायता करेगा।